ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

पौष-माघ संवत् नानकशाही ५५७ जनवरी 2026 वर्ष १९ अंक ५

गुरुद्वारा जन्म-स्थान बाबा दीप सिंघ जी,
गाँव पहूविंड, ज़िला तरनतारन

डायरेक्टोरेट ऑफ़ एजुकेशन

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के स्कूलों में उपलब्ध विशेष सुविधाएं

- एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग
- उच्च गुणवत्ता वाले अध्यापक
- स्मार्ट क्लास रूम, प्ले स्टेशन
- सेंट्रलाइज़्ड सिलेबस एवं एग्जाम
- मॉडर्न साइंस, कंप्यूटर एवं लैंगुएज़ लैब
- आर.ओ. सिस्टम, सीसीटीवी कैमरे, बसों की सहूलत
- प्रेक्टिकल नॉलेज एवं स्किल्स पर खास फोकस
- उच्च जीवन-मूल्यों एवं और नैतिक शिक्षा का प्रबंध
- प्रत्येक वर्ष अमृतधारी स्टूडेंट्स को स्कॉलरशिप
- लाइब्रेरी की सुविधा, विशेष स्पोर्ट्स स्टेडियम
- प्रतियोगिता परीक्षाओं पर खास ध्यान

''अपने बच्चे को बेहतर शिक्षा दिलाने के अलावा सिक्खी-सिद्धांतों के प्रति सजग करने व व्यक्तिव के सर्वपक्षीय विकास के लिए नैतिक शिक्षा से भरपूर जीवन-यापन की विद्या-प्राप्ति हेतु अपने निकटवर्ती शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्था में दाखिला करवाएं।''

- एडवोकेट हरजिंदर सिंह धामी
प्रधान, शिरोमणि गु.प्र. कमेटी

Special focus on Competitive exams

www.desgpc.org | 75270-07300 | Directorate of Education SGPC | Directorate of Education SGPC

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

पौष-माघ संवत् नानकशाही 557
वर्ष 19 अंक 5 जनवरी 2026

संपादक : सतविंदर सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब -143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 5

श्री गुरु हरिराय साहिब 7
–प्रो. साहिब सिंघ

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विराट व्यक्तित्व . . . 12
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'

बाबा दीप सिंघ जी शहीद 15
–डॉ. मनजीत कौर

'जापु साहिब' का भगवान 18
–स. नरिंदर सिंघ सोच (दिवंगत)

गुरबाणी में तन-मन प्रफुल्लित करने वाली बसंत ऋतु की प्रेरणा 24
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

असहयोग की अद्भुत मिसाल : चाबियों का मोर्चा 30
–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'

गुरुद्वारा श्री टोका साहिब पातशाही दसवीं 33
–डॉ. परमवीर सिंघ

पटना साहिब तथा निकटवर्ती जिलों में बसते सिक्ख 36
–स. जगमोहन सिंघ

ख़बरनामा 46

गुरबाणी विचार

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥
साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ ॥
प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा ॥
गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥
पुंन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥
नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥१५॥ *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०९)*

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी राग तुखारी में उच्चारण की गई 'बारह माहा' नामक बाणी की इस पउड़ी में माघ माह में तीर्थ-स्नान की प्राचीन युगों से चली आ रही परंपरा की पृष्ठभूमि के प्रसंग में इस माह में मनुष्य-मात्र को रूहानी व नैतिक गुणों रूपी मन-आत्मा के स्नान का ज्ञान बख़्शिश करते हैं।

गुरु जी का फरमान है कि माघ के माह में मेरी आत्मा तभी पवित्र होती है जब मुझे मन-अंतर के तीर्थ अथवा स्नान के बारे में सच्चा ज्ञान मिल सके। मैं यदि प्रभु-भक्ति रूपी गुण को भली प्रकार से ग्रहण कर सकूं, यदि निर्मल भक्ति-भावना मेरे अंत:करण में समा जाए तो मुझे मेरा प्रियतम परमात्मा स्वाभाविक ही मिल जाए।

गुरु जी मनुष्य-मात्र की ओर से आत्मा द्वारा प्रियतम परमात्मा को संबोधित करते हुए कथन करते हैं कि हे सुंदर प्रियतम प्रभु! मैं आपके गुण अपने हृदय में बसा कर यदि आपकी सच्ची स्तुति करने लग जाऊं तो यह मेरा ऐसा तीर्थ-स्नान हुआ जो आपको अच्छा लगता है। हे मालिक ! यदि मैं आप में लीनता को प्राप्त कर लूं तो यह गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों की त्रिवेणी अर्थात् तीनों नदियों के संगम-स्थल का ऐसा तीर्थ-स्नान हो सकता है जो आपको स्वीकार है अर्थात् मेरे लिए त्रिवेणी का स्नान बाहरी नहीं बल्कि आत्मिक स्नान ही कल्याणकारी है। आपकी लीनता की आत्मिक स्थिति में सातों समुद्र समाये हुए हैं । तीर्थ-स्नान के साथ-साथ माघ माह में तीर्थ-स्नानों पर जाकर किए जाने वाले अन्य कर्मों, जैसे पुन्य-दान, पूजा-उपासना आदि की पृष्ठभूमि सहित गुरु जी कथन करते हैं कि सभी युगों अर्थात् प्राप्त जीवन-काल में जिसने परमात्मा की सदीवी वास्तविकता अर्थात् उसके अस्तित्व का सत्य जान लिया, उसके पुन्य-दान, पूजा-उपासना आदि समझो स्वत: हो गए अर्थात् उसको ये बाहरी कर्म करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। गुरु जी फरमान करते हैं कि हे नानक! हरि-सुमिरन अर्थात् परमात्मा की सच्ची स्तुति रूपी महारस पीने वाले का अड़सठ तीर्थों का स्नान वैसे ही हो जाता है अर्थात् उसको इन बाहरी तीर्थों के स्नान की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। कहने से तात्पर्य, केवल आत्मिक स्नान ही गुरमति में स्वीकार्य है, न कि बाहरी तीर्थ-स्नान ।

संपादकीय

. . . सगल संगि हम कउ बनि आई॥

गुरमति विचारधारा का सूर्योदय होने से पूर्व धर्म का सकारात्मक स्वरूप लगभग आलोप था। इसी हालात को **"धरमु पंख करि उडरिआ"** फरमान किया गया है। भाईचारक रिश्ते को मजबूत करने और व्यवहारिक रूप में यह रिश्ता स्थापित करने के कारनामे को श्री गुरु नानक पातशाह की पहलकदमी और अन्य गुरु साहिबान के लंबे संघर्ष ने ही सम्पूर्ण किया। यह गुरु-घर ही है जिसने **"खहि मरदे बाह्मणि मउलाणे"**— वैर-विरोध करने से रोका। यह गुरु-घर ही है जिसने 'सज्जन' नाम रख कर आम लोगों को लूटने और मार डालने वाले बगुला-भक्तों को लोक-हित के लिए धर्मशाला चलाने वाले परोपकारी सिक्ख बना कर लोक-कल्याण का आदर्श बना दिया। यहां तक कि कौडा भील जैसे नरभक्षों को भी सबके साथ सद्भावना रखने का रास्ता दिखा दिया। गुरु-घर ने भाई घन्हईआ जी जैसे सेवा और परोपकार के अनोखे विस्मयकारी मॉडल अर्थात् आदर्श सिक्ख विकसित किये, जिन्होंने मैदान-ए-जंग में बिना भेदभाव किए सिक्ख तथा मुग़ल सिपाहियों को जल छका कर शीतलता प्रदान की और उनके ज़ख्मों पर मरहम लगाई। ऐसी अनेक उदाहरणें, सद्भावना, मानवता की निष्काम सेवा, जरूरतमंदों की तन-मन-धन से मदद करने संबंधी हवाले सिक्ख इतिहास के पन्नों पर सुनहरी अक्षरों में अंकित हैं।

दुनिया भर में सर्वधर्म-सद्भाव की आवाज़ बुलंद करने की शुरूआत करने का श्रेय भी सिक्ख गुरु साहिबान को ही प्राप्त है। निस्संदेह समय-समय पर इस दिशा में अन्य धार्मिक नेता भी कोशिश करते रहे हैं, परन्तु सर्वधर्म-सद्भाव को लोक-लहर, जन-आंदोलन के रूप में उभारने का कार्य केवल गुरु साहिबान के ही हिस्से आया है। यह बात पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कही जा सकती है। इस वास्तविकता को झुठलाना नामुमकिन है।

गुरु साहिबान ने अपने साजे-निवाजे सिक्ख पंथ / खालसा पंथ को सर्वधर्म-सद्भाव के उत्तम नमूने के रूप में संसार को एक रहमत-सौगात के रूप में दिया है। सिक्ख पंथ का पूरा प्रशिक्षण गुरु-घर की पाठशाला में हुआ है। गुरु-घर के रूप में गुरु के सिक्खों को सेवा और परोपकार के प्रशिक्षण-केंद्रों में से ऐसे अमली पाठ पढ़ने और अमल में लाने के अभ्यास प्रदान किए हैं कि गुरु का सच्चा सिक्ख जहां भी दुनिया के जिस कोने में भी बैठा है, वह सरबत्त का भला मांगता हुआ

प्रतिदिन अरदास करता है। वह प्रत्येक कौम, प्रत्येक नसल, प्रत्येक देश, प्रत्येक प्रांत को **"सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन"** और **"ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई"** जैसे गुरु-फरमान की दिशा में चलता हुआ जानता, पहचानता एवं व्यवहार करता है। गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख का यही कर्म है, यही किरदार है और यही व्यवहार है। वह नसली घृणा के ज़हर का अंशमात्र भी अपने हृदय में नहीं आने देता और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के निर्मल उपदेश के कारण पूरी तरह से सचेत और सावधान रहता है।

आज संसार में एक बार पुन: नसली नफ़रत का कुचक्र चल रहा है। नए प्रकार के भाईचारक परंपरा के लुटेरे सत्ता में आ चुके हैं। समाज के विखंडन का सिलसिला जारी है। और तो और, सर्वधर्म-सद्भाव का दृढ़ता से पढ़ाया गया सबक सिक्खों को भी भुलाने की कोशिशें जारी हैं। यह वक्त का ऐसा नाजुक मोड़ है जहां गुरु के सिक्ख को गुरु-सिद्धांत एवं गुरमति विचारधारा, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में उनके सदा नेतृत्व के लिए उपस्थित है, के साथ परिपक्वता के साथ जुड़े रहने के लिए सजग होने की ज़रूरत है। गुरु के सिक्ख के लिए अपनी पंथक हस्ती को भी आन-शान सहित कायम रखना है, इसलिए संघर्ष करने से पीछे नहीं हटना; अपने आत्मसम्मान, अपने आत्माभिमान को भी बचाना है। सिक्खी स्वरूप को हर हाल में कायम रखना है, परन्तु मानवता के प्रति प्रेम, सद्भावना का गुरु साहिबान द्वारा दृढ़ करवाया सबक कदाचित नहीं भूलना। वक्त के इस ख़ास नाजुक मोड़ पर गुरु के सिक्ख को अपने किरदार-व्यवहार का आत्मविश्लेषण भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मानवतावादी सिद्धांत के रूबरू गहनता के साथ करने की ज़रूरत है कि कहीं वो अचेत रूप से सर्वधर्म-सद्भाव के सुमार्ग से हट कर तो नहीं चल रहा! क्या वह जात-पांत और छुआ-छूत जैसी सामाजिक बीमारियों से बचा हुआ है? क्या वह 'स्त्री' के प्रति गुरु-दृढ़ाए गुरमति सिद्धांत से सचेत या अचेत रूप में कहीं दूर तो नहीं जा रहा? गुरु के सिक्ख को आज के दौर में गुरु द्वारा दृढ़ करवायी गई भाईचारक निकटता को भी बरकरार रखने की ज़रूरत है। सिक्ख पंथ में आज गुरु-काल वाला ही आपसी प्रेम, मेलजोल, आपसी सहयोग का माहौल पुन: कायम होना चाहिए।

श्री गुरु हरिराय साहिब

–प्रो. साहिब सिंघ

जन्म तथा जन्म-स्थान : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पांच साहिबज़ादे— बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अटल राय जी, बाबा सूरज मल्ल जी, बाबा अणी राय जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब थे और एक सुपुत्री— बीबी वीरो जी थीं। बाबा गुरदित्ता जी के दो सुपुत्र थे— धीरमल्ल तथा श्री (गुरु) हरिराय साहिब।

श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म कीरतपुर साहिब में १९ माघ, संवत् १६८६ (मुताबिक १६ जनवरी, १६३० ई.) को हुआ था। आजकल कीरतपुर साहिब ज़िला रोपड़ (रूपनगर) में स्थित है। यह नगर आषाढ़, संवत् १६८४ (१६२७ ई.) में बसा था । इसको दून हंडूर के राजा तारा चंद से ज़मीन खरीदकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के हुक्म से बाबा गुरदित्ता जी ने बसाया था। यह वही जगह है जहां श्री गुरु नानक देव जी साईं बुड्ढण शाह से मिले थे।

गुरुआई : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ६ चैत्र, संवत् १७०१ (मुताबिक ३ मार्च, १६४४ ई.) को रविवार वाले दिन कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समाये थे। परलोक गमन करने से पूर्व उन्होंने श्री गुरु हरिराय साहिब को अगला गुरु घोषित किया। श्री गुरु हरिराय साहिब ११ चैत्र, संवत् १७०१ (मुताबिक ८ मार्च, १६४४ ई.) को गुरुआई पर आसीन हुए।

सूखा तथा अकाल पड़ना : अकबर के शासन-काल में माझा क्षेत्र में तीन-चार वर्ष बहुत सूखा पड़ने के कारण भयानक अकाल पड़ गया। श्री गुरु अरजन देव जी ने माझा क्षेत्र के गांव-गांव जाकर जरूरतमंदों को आर्थिक सहायता देकर कुएं खुदवाये थे। इस अकाल का असर जब लाहौर शहर पर पड़ा, तो गुरु जी आठ महीने लाहौर रहकर पीड़ितों की हर तरह से मदद करते रहे। यही कारण था कि अकबर के दिल में गुरु-घर के प्रति स्नेह था।

जहांगीर के वक्त लाहौर तथा कश्मीर में गिल्टी बुखार ने बहुत नुकसान किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब कश्मीरियों की मदद के लिए शीघ्रतम कश्मीर गए थे। वहां एक वर्ष के लगभग लोगों की वे हर तरह से सहायता करते रहे। फिर लाहौर आकर भी गुरु जी ने भुखमरी का शिकार हो रहे लोगों की मदद की थी। कश्मीर एवं माझा क्षेत्र में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बहुत लोकप्रिय हो गए थे। जहांगीर पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। उसे भ्रम हो गया था कि कहीं सिक्खों की बढ़ती ताकत मुगल हुकूमत के लिए ख़तरा न बन जाए।

शाहजहां के शासन-काल में भी हिंदोस्तान में भारी अकाल पड़ा— पहले दक्षिण में, फिर

कश्मीर में और फिर पंजाब में। कश्मीर में तो ज्यादा बारिश ने फसल तबाह कर दी, दक्षिण एवं पंजाब में सूखे ने लोगों को आतुर कर दिया। १६३९ ई. में शाहजहां ने पंजाब में नहरें खुदवाने के प्रत्यन तो किए व कराए किंतु फिर भी १६४६ ई. में यहां अकाल पड़ ही गया। तीन वर्ष तक बहुत सूखा पड़ा रहा। जहां-जहां इस सूखे ने तबाही मचाई, लोग एक-एक निवाले को आतुर हो गए। एक-एक रोटी के बदले शरीर की इज्जत बिक रही थी। मनुष्य, मनुष्य को ही खाने लग गया था। माता-पिता अपने बच्चों को बेच रहे थे। शाहजहां ने शाही खज़ाने में से चालीस हज़ार रुपये देकर दस लंगर खुलवाये थे, किंतु इतनी थोड़ी राशि से और सरकारी हाकिमों द्वारा बांटी गई धनराशि से अकाल पीड़ितों की कितनी सहायता हो सकती थी!

श्री गुरु हरिराय साहिब के सामने अपने दादा और पड़दादा जी का जीवन-वृत्त मौजूद था। जिस दसवंध–मर्यादा ने श्री गुरु अरजन साहिब तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय गरीबों को सहारा दिया था, वही दसवंध अब भी अकाल-पीड़ितों के लिए टेक साबित हुआ। अलग-अलग प्रांतों में से सुखी बसते सिक्खों ने दिल खोलकर धन भेजा, जो श्री गुरु हरिराय साहिब ने अकाल-पीड़ितों की मदद हेतु प्रयोग किया।

भयभीत को सहारा : शाहजहां की पक्षपाती नीतियों के कारण प्रजा, खासकर हिंदू जनता ज्यादा परेशान थी। मानवता पैरों तले रौंदी जाने लगी थी। सिक्ख धर्म के दृष्टिकोण से मानवता के दो ही बड़े आदर्श हैं— न किसी को डराना और न ही किसी से डरना। भयभीत लोगों को सहारा देने के लिए श्री गुरु हरिराय साहिब कीरतपुर साहिब के आस-पास के इलाकों में प्रचार करते रहे। कीरतपुर साहिब से दूर पहाड़ी इलाके में खासकर ज्यादा जरूरत थी, क्योंकि वे लोग पत्थर-पूजक थे और डरपोक भी थे। गुरु जी ने १६५४ ई. से १६५८ ई. तक दुआबा, मालवा एवं माझा के इलाके में चार वर्ष तक भ्रमण किया।

कीरतपुर साहिब से चलकर वड्डी बहिली, हरीआं वेलां, भुंगरनी, बंबेली आदि गांवों में पड़ाव करते हुए श्री गुरु हरिराय साहिब करतारपुर शहर से बाहर लगभग एक मील के फासले पर आ ठहरे। वहां अब गुरुद्वारा मंजी साहिब सुशोभित है। करतारपुर में पंद्रह दिन निवास कर गुरु जी श्री अमृतसर साहिब आए तथा यहां छ: महीने निवास रखा। मालवा के प्रसिद्ध भाई भगतू जी यहां गुरु जी के दर्शन करने आए तथा यहीं पर अकाल प्रस्थान कर गए। गुरु जी ने भाई भगतू जी की जगह उसके छोटे पुत्र भाई जीऊण जी को निष्ठावान सिक्ख जानकर मालवा क्षेत्र का मसंद नियुक्त कर दिया।

मालवा क्षेत्र में श्री गुरु नानक देव जी के पंथ का प्रचार करने के लिए गुरु जी करतारपुर से चल पड़े। नूरमहल, डरौली, भाई रूपा, कांगड़ आदि नगरों से होते हुए गुरु जी गांव मराझ पहुंचे। यहां के चौधरी काला ने आपकी बड़ी सेवा की। गुरु जी यहां पर कई दिन तक ठहरे। एक दिन चौधरी काला अपने दो भतीजों— फूल एवं संदली को साथ लेकर गुरु जी के दरबार में आया। इन

लड़कों के माता–पिता मर चुके थे। चौधरी काला ही इनका पालन-पोषण करता था। लड़कों ने गुरु जी को प्रणाम कर अपने पेट पर हाथ फेरना शुरू कर दिया । गुरु जी देखकर हंस पड़े। काला से कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि ये यतीम बच्चे कुछ खाने को मांगते हैं। गुरु जी ने वचन किया कि इनकी संतान तो सतलुज एवं यमुना के मध्य शासन करेगी।

दाराशिकोह पर असर : मुगल बादशाहों के खुफिया तंत्र का सिलसिला बहुत ताकतवर एवं कामयाब था। शाहजहां को सब प्रकार की खबरें मिल रही थीं कि मुसीबत के समय कौन दुखियों का सच्चा हमदर्द साबित हो रहा है। बादशाह पर इस बात का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक-सी बात थी, किंतु गुरु जी की ख़्याति का सबसे ज्यादा असर पड़ा शाहजहां के पुत्र दाराशिकोह पर। दाराशिकोह पंजाब का गवर्नर था। दाराशिकोह के मन में गुरु-घर की उच्चता घर कर गयी थी । समय मिलने पर दाराशिकोह श्री गुरु हरिराय साहिब से मिलता भी रहा। उसने एक बार गुरु-घर के लंगर के लिए जागीर देने की पेशकश भी की किंतु गुरु जी ने यह कहकर इन्कार कर दिया कि यह लंगर सिक्खों के प्यार तथा कुर्बानी के द्वारा ही चलना चाहिए।

शारीरिक सुख-दुख प्रत्येक मनुष्य पर आया करते हैं। बड़े लोगों के निजी हकीम- डॉक्टर होते हैं। जितना ज्यादा धन, उतना ज्यादा जिंदगी को खतरा। दाराशिकोह भी एक बार बीमार पड़ गया। बीमारी भी खतरनाक बन गई। ऐसे समय में ऐसे आदमियों की जान की रक्षा करने के लिए विशेष प्रबंध करने पड़ते हैं। मुगल बादशाहों में तो यह रीति भी चली आ रही थी कि सत्ता की खातिर भाई ही भाई की जान का दुश्मन बन रहा था। श्री गुरु हरिराय साहिब की निर्वैरता तथा सेवा-भावना पर शाहजहां ने विश्वास कर उनके दवाखाने से खास किस्म की दवा मंगवाई। उस दवा का सेवन करने से दाराशिकोह तंदरुस्त हो गया।

शाही तख़्त के लिए भागदौड़ : शाहजहां के चार पुत्र थे— दाराशिकोह, शुजाह, औरंगजेब तथा मुराद। उसने अपनी बादशाही को चार हिस्सों में बांटकर प्रत्येक पुत्र को एक-एक हिस्से का गवर्नर बना दिया :—

१) दाराशिकोह : इलाहाबाद एवं पंजाब का गवर्नर

२) शुजाह : बंगाल का गवर्नर

३) औरंगजेब : दक्षिण भारत का गवर्नर

४) मुराद : मालवा तथा गुजरात, काठियावाड़, मुलतान का गवर्नर

शाहजहां का दाराशिकोह के साथ सबसे ज्यादा लगाव था। इसी कारण अन्य तीन भाइयों की दाराशिकोह के विरुद्ध संयुक्त ईर्ष्या थी ।

सितंबर, १६५७ ई. में शाहजहां सख़्त बीमार पड़ गया। बचने की आशा न रही। उसने अपने बड़े पुत्र दाराशिकोह को अपने पास बुलवा लिया और उसको तख़्त का वारिस घोषित कर दिया। अन्य तीनों भाइयों ने चिट्ठी-पत्र के माध्यम आपस में सलाह बना ली कि सभी आगरा में मुलाकात करें। औरंगज़ेब सबसे चालाक था। उसने दांव

खेला कि दारा ने बादशाह को नज़रबंदी में रखा है। हमने अपने पिता को उसकी गुलामी से आज़ाद कराना है।

इतने में नवंबर, १६५७ ई. में शाहजहां बिलकुल तंदरुस्त हो गया। मुराद ने बगावत कर दी तथा दिसंबर में उसने खुद को बादशाह कहलवाना शुरू कर दिया। शुजाह ने भी बंगाल में बगावत कर दी । दाराशिकोह ने भी राजनीतिक चाल चलते हुए मुराद एवं औरंगज़ेब के मध्य फूट डालने की कोशिश की किंतु कामयाब न हुआ। वे दोनों अपने-अपने इलाके से फौज लेकर नर्मदा नदी के इस पार अप्रैल, १६५८ ई. के मध्य में इकट्ठा हो गए।

शाहजहां नवंबर, १६५७ ई. में बीमारी के कारण दिल्ली से लौटकर आगरा चला गया। दाराशिकोह भी उसके साथ ही था। जब शाहजहां को मुराद व औरंगजेब के बारे में पता चला तो उसने दारा को फौज देकर मुकाबला करने के लिए भेजा। दारा की पराजय हुई। वो आगरा के लिए वापिस भागा। वह इतना डर गया कि आगरा भी न रुक सका। बूढ़े तथा कमज़ोर पिता को छोड़कर वो दिल्ली भाग आया।

१८ जून, १६५८ ई. को आगरा पहुंचकर औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को किले में नज़रबंद करवा दिया तथा दाराशिकोह का अस्तित्व मिटाने के लिए मुराद सहित दिल्ली को चल पड़ा। मथुरा पहुंचकर उसने मुराद को भी मौका पाकर कैद कर लिया तथा आगरा भिजवा दिया, जहां किले में उसको कत्ल करवा दिया गया।

घबराया हुआ दारा दिल्ली से भी भाग निकला। गोइंदवाल साहिब के निकट तट से ब्यास नदी पार कर लाहौर जा पहुंचा। औरंगजेब ने दिल्ली पहुंचकर कुछ दिन मुकाम किया। फिर फौज लेकर लाहौर को चल पड़ा। यह ख़बर सुनते ही दारा लाहौर से भाग निकला। वो मुलतान पहुंचा। औरंगजेब ने भी लाहौर से मुलतान तक दारा का पीछा किया। मुलतान से औरंगजेब खुद तो दिल्ली वापिस आ गया तथा दारा को मारने का काम अपने कुछ बहादुर सैनिकों के सुपुर्द कर आया। दारा मुलतान से सिंध, कच्छ तथा पुन: सिंध की तरफ व्याकुल हालत में ठोकरें खाता हुआ आखिर दादेर के पास पकड़ा गया और दिल्ली लाकर कत्ल कर दिया गया। औरंगज़ेब ने शुजाह को ऐसे हाथ दिखाए कि वह भी खाली हाथ होकर अराकान के इलाके में जा मरा। इस तरह हिंदोस्तान की बादशाही औरंगज़ेब के हाथ आई। यह सारा ज़िक्र १६५८ ई. का है।

शाही बुलावा : पंजाब में सिक्खों की बढ़ रही ताकत की रिपोर्टें औरंगज़ेब को भूल नहीं सकती थीं। दूसरी तरफ उसको यह कहकर भड़काया जा रहा था कि श्री गुरु हरिराय साहिब ने दाराशिकोह के भागने के समय उसकी मदद की थी। औरंगज़ेब ने श्री गुरु हरिराय साहिब को दिल्ली आने का बुलावा भेजा। उस समय तक गुरु जी माझा, मालवा, दुआबा क्षेत्र के गांवों में प्रचार कर कीरतपुर साहिब वापिस लौट चुके थे।

गुरु जी ने अपनी जगह अपने बड़े पुत्र रामराय

को भेजा तथा कुछ सूझवान मसंद (प्रचारक) भी साथ भेज दिए। जाते समय गुरु जी ने शिक्षा दी कि प्रत्येक कार्य में गुरु- हुक्म में रहना, गुरु को सदैव अंग-संग समझना। रामराय बहुत ही प्रवीण तथा हाज़िर- जवाब था। उसकी विद्वता का औरंगज़ेब पर बहुत असर पड़ा। सिक्ख इतिहासकार लिखते हैं कि बादशाह ने रामराय की अज़मत परखने के लिए कई तरह की अज़माइश की। रामराय प्रत्येक अज़माइश पर खरा उतरता रहा, जिसका परिणाम यह हुआ कि औरंगज़ेब रामराय का बहुत सम्मान करने लग गया। औरंगज़ेब पक्का मुसलमान था। इसलाम के प्रति उसकी श्रद्धा असीमित थी। वास्तव में वह रामराय को दिल से जीतकर अपने धर्म में लाना चाहता था क्योंकि रामराय अभी किशोरावस्था का युवा था। औरंगज़ेब के दरबारी, काज़ी, मौलवी, बादशाह की इस नीति को समझते हुए बादशाह द्वारा रामराय पर कई किस्म के सवाल करवाते रहते थे। रामराय की हाज़िर-जवाबी के आगे काज़ियों की पेश नहीं जाती थी और बादशाह की सदैव संतुष्टि होती रही। आखिर एक दिन काज़ियों की प्रेरणा से औरंगज़ेब ने कहा कि "श्री गुरु नानक देव जी ने जो मुसलमानों के बारे में फरमाया है— "मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर॥" इससे क्या अभिप्राय है? काज़ियों की चोट आखिर सही जगह पर लगी। बादशाह से बना सम्बंध कायम रखने के लिए रामराय ने कह दिया कि श्री गुरु नानक देव जी ने असल में "मिटी बेईमान की" उच्चारण किया था, लिखारी की भूल की वजह से "मिटी मुसलमान की" हो गया है। औरंगज़ेब द्वारा झूठा मान-सत्कार वाला जाल केवल रामराय पर ही नहीं डाला जा रहा था, यह जाल उसके साथ गए मसंदों पर भी बिछाया जा रहा था।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने जब यह ख़बर सुनी तो उन्होंने आहत होते हुए निश्चय किया कि रामराय अब भरोसे लायक नहीं रहा कि वो श्री गुरु नानक देव जी के घर के सिद्धांतों की रक्षा कर सके तथा सिक्ख धर्म के प्रचार की जिम्मेदारी निभा सके ।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने रामराय को अपने निर्णय की ख़बर भेज दी कि "तूने अब कभी हमारे पास मत आना, क्योंकि औरंगज़ेब के साथ सम्बंध दृढ़ करने की खातिर तूने श्री गुरु नानक पातशाह के सिद्धांतों एवं गुरबाणी का अपमान किया है।" औरंगज़ेब अपनी चाल में किसी हद तक कामयाब हो गया था। उसने गुरु साहिब तथा रामराय के बीच और फूट डालने के लिए रामराय को जागीर दे दी, किंतु सिक्ख कौम में गुटबाजी पैदा करने में वो कामयाब न हो सका। सिक्खों की श्रद्धा अपने गुरु के संग बनी रही। यह सारा ज़िक्र फरवरी, १६६० ई. के बाद का है।

ज्योति-जोत समाना : अपना अंतिम समय निकट आया जानकर गुरु जी ने अपनी जगह अपने छोटे साहिबज़ादे श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी प्रदान की तथा आप जी ५ कार्तिक, संवत् १७१८ ई. (मुताबिक ६ अक्तूबर, १६६१ ई.) को कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विराट व्यक्तित्व का इतिहासकारों द्वारा वर्णन

*–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन क्रांतिकारी जीवन रहा। जितने गुण उनमें थे इतने सारे गुण किसी एक व्यक्तित्व में मिलने असंभव बात लगती है। भाई नंद लाल जी 'गंजनामा' में लिखते हैं कि "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख्सियत सत्य का प्रकाश करने वाली और असत्य की रात के अंधेरे का नाश करने वाली है। उनकी लोकप्रियता का नगाड़ा नौ लोकों में बज रहा है। वे सिक्खों से बेहिसाब प्रेम करते हैं। हम उनके आशिक हैं, वे हमारे हैं। उनके बोल मुर्दों में जान डाल देते हैं।"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के एक दरबारी कवि हंसराम ने अति सुंदर कहा है कि "जिन राजाओं के दरबार में जाने के लिए लोग महीनों तक तरसते हैं वे गुरु-दरबार में दरबान, सेवक बने देखे जा सकते हैं।"

अमृत राय ने भी खूब कहा है कि "आप जी के व्यक्तित्व में से नौ रस झर रहे हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण के आगे कोई ठहर नहीं सकता। धर्म का मूल, जो सर्म (उद्धम) है, वो इन्हीं के पास है। यही कहना बनता है कि शांति के सागर हैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी। वीर रस में गुंथे, रणविजयी हैं। बख़्शिश करने में उनका कोई सानी नहीं है।"

एक अन्य कवि लखन राय का विचार है कि "श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई लहर की रक्षा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कलम व तेग के साथ कर रहे हैं।" कवि मंगल राय कहता है कि "श्री अनंदपुर साहिब में आनंद ही आनंद है और वैरी भयभीत हैं।"

इतिहासकार बैनर्जी बयान करता है कि "इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान शख्सियत हैं। उनकी शख्सियत सर्वकालिक है।"

प्रसिद्ध सिक्ख विद्वान, खोजकर्ता, चिंतक व दार्शनिक प्रिंसिपल सतबीर सिंघ दशमेश पिता जी के बारे में लिखते हैं कि "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में पैगंबर, रक्षक, संत, कवि, भक्त, सुधारक, रूहानी रहबर, बांट कर छकने वाले, सभी भाषाओं के ज्ञाता, जत्थेदार, स्ट्रेट्समैन, नीतिकार, जरनैल, संत-सिपाही, परोपकारी, उत्तम तीरंदाज, तेग के धनी, सहिष्णुता व नम्रता के पुंज, कौम के कामयाब अगुआ, घुड़सवार, सांसारिक कष्ट हरने वाले, निशानेबाज, जगत-नेता, माया में विरक्त, निर्वैर, निडर, मजलूमों के संरक्षक, लेखक तथा अन्य बहुत-से गुण हैं। गुरु जी ने जिस महान कार्य को हाथ में लिया वह एक पवित्र एवं आवश्यक

**बी-एस-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५७९९०*

कार्य था। उस कार्य को उन्होंने पूरा भी किया। जुल्मों का मुकाबला करने के लिए गुरु जी ने जो योजनाएं व नीतियां बनाईं वे उनकी आलौकिक समझ का प्रमाण हैं। रसातल में से जनता को निकाल कर गुरु जी ने उसे चढ़दी कला प्रदान की। मुरझाए चेहरों पर वे रौनक लेकर आए। कमजोर मनों को बलवान किया। मौत से डरने वाले लोगों में मरने का उत्साह भर दिया।"

इतिहासकार लतीफ लिखता है कि "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का लक्ष्य ऊंचा था और उन्होंने जिस काम को हाथ में लिया वह महान था। यह उनकी बरकत ही है कि उनके नेतृत्व में मुर्दा समझे जाने वाले तथा दबे-कुचले लोगों ने ही राजनीतिक वर्चस्व एवं स्वतंत्रता प्राप्त की।"

लतीफ आगे लिखता है कि "खतरे व तबाही के बीच भी गुरु जी ने हौसले का दामन नहीं छोड़ा। युद्ध के मैदान में इनकी जुर्रत तथा बहादुरी देखने लायक होती थी। गुरु जी धार्मिक गद्दी के रहबर, युद्ध में निर्भय योद्धा, अपनी मसनद पर सच्चा पातशाह और संगत में बैठे हुए एक फकीर थे।"

एक अन्य इतिहासकार कनिंघम दशम पातशाह जी के बारे में लिखता है– "केवल सांसारिक सफलता ही किसी की महानता की निशानी नहीं, महानता तो सदैव आदर्श व लक्ष्य की होती है। जिस लक्ष्य-प्राप्ति हेतु कोई अगुआ संघर्षरत हो, वह उसकी महानता का पैमाना है। जब हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जालिमों को खत्म करने का मिशन देखते हैं तब उनके बढ़प्पन और महान व्यक्तित्व के बारे में एकमत होना पड़ता है। उनका स्थान महापुरुषों की क़तार में बहुत ऊंचा है। पूर्ववर्ती गुरु साहिबान की कृपा से सिक्खों में असीम जज्बा भरा जा चुका था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ऐसी रूह भरी कि सिक्खों के मन को बदलकर उन्हें हर पक्ष से बलवान एवं मजबूत बना दिया। सिक्खों की अक्ल व शक्ल दोनों ही बदल दी। सिक्खों की पहचान संसार भर में अलग हो गई। गुरु जी ने वह करिश्मा कर डाला जो अन्य किसी व्यक्ति द्वारा न हो सका।"

गार्डन गुरु जी की महिमा का वर्णन इन शब्दों में करता है– "जनता की मुर्दा हड्डियों में जिंदगी की लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दौड़ाई। गुरु जी में धार्मिक अगुआ, शाह, योद्धा और नीतिज्ञ के सभी गुण विद्यमान थे। उस विकट समय में केवल वे ही सिक्खों का सही नेतृत्व कर सकते थे। उन्होंने सिक्खों में शक्ति की उमंग भरी। यही कारण है कि कृपाण को रहित मर्यादा का अंग बनाया गया।"

मैकालिफ लिखता है कि "गुरु जी की ताकत और उनके उपदेशों का असर आम लोगों पर हुआ, जिसने दबे-कुचले लोगों को संसार के महान योद्धा बना दिया। सिक्ख गुरुओं से पहले दुनिया के किसी भी जरनैल ने प्रजा को संगठित (जत्थेबंद) करने का ख्याल तक नहीं किया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन तथाकथित दलितों में, जिन्हें संसार के अनचाहे लोग कहा जाता था, ऐसी शक्ति भरी कि वे योद्धा बन उभरे और फिर योद्धा भी ऐसे कि जिनकी दृढ़ता, बहादुरी तथा वफादारी ने अपने रहबर को कभी मायूस न

किया।"

गोकुल चंद नारंग एक अलग अंदाज में इस विचार को पेश करता है– "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने चिड़ियों को शाही बाजों का शिकार करने का ढंग सिखाया।"

लाला दौलत राय ने भी खूब कहा है– "जिन तथाकथित शूद्रों की बात भी कोई नहीं पूछता था, जिन्हें दुत्कारा व फटकारा जाता था, जो ज़लालत और गुलामी में जीवन गुजार रहे थे, उनको विश्व के योद्धाओं के मुकाबले में खड़ा करना केवल और केवल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का ही काम था।"

साधु टी. एल. वासवानी ने इस संबंध में लिखा है कि "जो काम हजारों मिलकर भी न कर सके वह एक ने ही कर दिखाया। जो पीस (कुचल) कर मिट्टी में मिलाए जा रहे थे और दीन-हीन की भांति रहने को विवश कर दिए जाते थे, उनको अपने पैरों पर खड़ा किया, उन्हें गले से लगाया और 'गुरु का बेटा' कहा। उन्हें 'अमृत' से नवाजा, सरदार बनाया।"

सर चार्ल्स गफ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को विश्व का उत्तम दूरदर्शी, अदम्य साहसी, पवित्र, आशावादी और धार्मिक रंगत को आभा प्रदान करने वाला नायक मानता है। एलफिंस्टन और बर्न्स भी गुरु जी की उपमा व महिमा गाते हुए उन्हें एक नई कौम की संरचना करने वाला लिखते हैं। सभी लेखक एवं इतिहासकार गुरु जी का यशोगान करने में एक जुबान व एकमत हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी किसी जाति या देश, प्रांत के अगुआ नहीं थे, बल्कि संपूर्ण जगत व मानवता के रहबर थे। श्री गोकुल चंद नारंग के अनुसार,

भाई गुरदास जी (द्वितीय) दशमेश पिता जी के विषय में लिखते हैं :

वहि उपजिओ चेला मरद का मरदान सदाए।
जिनि सभ प्रिथवी कउ जीत करि नीसान झुलाए।
तब सिंघन कउ बखस करि बहु सुख दिखलाए।
फिर सब प्रिथवी के ऊपरे हाकम ठहिराए।
तिनहूं जगत संभाल करि आनंद रचाए।
तह सिमरि सिमरि अकाल कउ हरि हरि गुन गाए।
वाह गुरु गोबिंद गाजी सबल जिनि सिंघ जगाए।..
(वार १४:१९)

कवि भाई संतोख सिंघ ने बहुत ख़ूब एवं उपयुक्त कहा है– "अगर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी न होते तो हिंदुस्तान में जुल्म का राज्य कभी भी खत्म न होता।"

विश्व के इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नाम अंकित है। उनका नाम प्रत्येक सिक्ख के हृदय-पटल पर भी अंकित है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नाम खालसा पंथ की चढ़दी कला का प्रतीक है।

बाबा दीप सिंघ जी शहीद

*–डॉ. मनजीत कौर**

गुरबाणी का पावन फरमान है :

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०५)

धर्म हेतु कुर्बान होने वालों को मृत्यु का भय नहीं रहता। उन्हें तो मृत्यु भी जीवन से अधिक आनंदमय लगती है। भक्त कबीर जी की पावन बाणी इस संदर्भ में अति सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है :

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु॥
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १३६५)

श्री गुरु नानक देव जी का इस संदर्भ में फरमान है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै॥
सिरु दीजै काणि न कीजै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १४१२)

अर्थात् हे भाई! अगर तुझे प्रेम का खेल खेलने का चाव है अर्थात् जीवन सफल करने की मन में उमंग है, तो तू अपना सिर हथेली पर रखकर प्रभु की गली (मार्ग) में आ और किसी की भी परवाह मत कर! इस मार्ग पर पांव तभी रखा जा सकता है अगर स्वयं को समर्पित कर देने में जरा भी संकोच अर्थात् झिझक न हो।

इस संदर्भ में अगर अवलोकन करें तो सिक्ख इतिहास में हंसते-हंसते देश-धर्म हेतु शहीद हो जाने वालों की सूची बड़ी लंबी है।

"सिरु धरि तली गली मेरी आउ"– इस पावन पंक्ति को पढ़ते ही एक अनोखी तसवीर उभर कर आंखों के सामने आ जाती है और वो तसवीर है– महान योद्धा, अमर शहीद, शहीदों की मिसल के प्रमुख, नैतिक जीवन-मूल्यों एवं सिक्ख परंपरा को कायम रखने वाले, सेवा एवं त्याग की प्रतिमूर्ति, सत्य के धारक, वचन के बली, धन्य-धन्य बाबा दीप सिंघ जी शहीद की। ऐसे ही महाबली शूरवीरों के लिए एक शायर की बहुत सटीक एवं सुंदर पंक्तियां स्मृति-मंडल में सहज ही आ जाती हैं :

तेरी कुर्बानी दी दुहाई खालसा!
धंन-धंन तेरी है कमाई खालसा!!
सीस लत्था तली ते टिकाई जा रिहैं,
कीती तेरे धड़ सी लड़ाई खालसा!
धंन-धंन तेरी है कमाई खालसा!!

बाबा दीप सिंघ जी का जन्म १६८२ ईस्वी में माता जीऊणी जी तथा पिता भाई भगता जी के घर, जिला तरनतारन के गांव पहूविंड में हुआ। माता-पिता ने प्यार से आपका नाम 'दीप' (दीपा) रखा। अमृत-पान के उपरांत पंथ की मर्यादा के अनुसार

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

आपका नाम 'दीप सिंघ' हो गया। 'यथा नाम, तथा गुण' वाली कहावत आप पर पूर्णतया चरितार्थ होती है। आप सदैव ईश्वर-सुमिरन करते हुए जीवन-कर्तव्य में लीन रहते। आप दृढ़निश्चयी व महान योद्धा तथा धार्मिक प्रवृत्ति के होने के साथ-साथ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के निकटवर्ती एवं परम स्नेही सिक्ख थे।

शहादत हेतु शूरवीरता की नितांत आवश्यकता होती है। शूरवीरता केवल शारीरिक बल की ही नहीं अपितु मनुष्य का मानसिक रूप से शक्तिशाली होना भी जरूरी है। ऐसी शक्ति का संचार प्रभु-अनुकंपा एवं गुरु की दया-दृष्टि से ही मुमकिन होता है। जब कोई गुरसिक्ख मन-वचन-कर्म से 'बाणी व बाणे' का धारक हो जाता है तो उसमें असीम शक्ति का संचार हो जाता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी माछीवाड़ा के जंगल से होते हुए कई स्थानों पर पड़ाव कर, श्री मुकतसर साहिब की जंग के बाद तलवंडी साबो पहुंचे। कुछ समय यहां निवास किया और यहां से संगत के नाम आवश्यक हुकमनामे जारी किये। इस स्थान पर ठहराव करने के कारण इस स्थान का नाम 'दमदमा' प्रसिद्ध हुआ। गुरु साहिब का तलवंडी साबो श्री दमदमा साहिब में पड़ाव था। बाबा दीप सिंघ जी भी यहां पर मौजूद थे। इसी स्थान पर संगत ने गुरु जी के समक्ष विनती की कि हमें गुरबाणी-उच्चारण तथा उसके सहज अर्थ समझाए जाएं। गुरु जी ने भाई मनी सिंघ जी तथा बाबा दीप सिंघ जी से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बीड़ (प्रतिलिपि) तैयार करवाई और सिक्खों को अर्थों सहित बाणी का पठन करवाया। इसी पावन स्थान से बाणी के अर्थों की टकसाल शुरू हुई, जो 'दमदमी टकसाल' नाम से विख्यात हुई। यह स्थान 'गुरु की काशी' नाम से भी विश्वविख्यात है।

इसी स्थान से जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान किया तब गुरबाणी पठन-पाठन एवं लेखन की पवित्र सेवा बाबा दीप सिंघ जी को सौंपी, जिसे उन्होंने अत्यधिक प्रेम व श्रद्धा-भाव से निभाया। साथ ही नाम-जाप के साथ-साथ संगत में बाणी के प्रति जागरूकता भी पैदा की। इस दौरान एक महान सेवा और जो निभाई गई वो थी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के (हस्तलिखित) स्वरूप (प्रतिलिपियां) तैयार करना। गुरबाणी-संभाल तथा पठन-पाठन की सेवा करते हुए जब कभी कहीं पर किसी तरह का संकट आदि का माहौल बनता तो बाबा जी तत्परता से वहां पहुंच जाते और संकटमोचन की भूमिका निभाते। बाबा बंदा सिंघ बहादुर द्वारा लड़ी गई जंगों में भी बाबा दीप सिंघ जी का विशेष योगदान रहा।

इतिहासकारों के अनुसार १७४८ ईस्वी में १२ मिसलें स्थापित की गईं। बाबा दीप सिंघ जी को 'शहीदां दी मिसल' का जत्थेदार नियुक्त कर दिया गया।

अहमद शाह दुर्रानी सिक्खों का कट्टर विरोधी था। १७५७ ईस्वी में उसने हिंदुस्तान पर एक और आक्रमण किया और कई शहरों को लूटा। दिल्ली जाते हुए इस दुष्ट ने श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर साहिब की पवित्र इमारत को धराशायी कर दिया, पावन सरोवर को पाट दिया। श्री अमृतसर साहिब के निवासी एवं संगत त्राहि-

त्राहि कर उठी। इस हृदयविदारक घटना की खबर जब बाबा दीप सिंघ जी तक पहुंची तो बाबा दीप सिंघ जी ने तत्काल इस गुरुधाम की बेअदबी करने वालों को नेस्तनाबूद करने की ठानी। शीघ्र ही अपनी जगह भाई नत्था सिंघ जी को सेवा सौंपी। दुष्टों का संहार करने के इरादे से श्री अमृतसर साहिब की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में बड़ी संख्या में सिक्खों के समूह बाबा जी के संग कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार हो गए। श्री अमृतसर साहिब के बाहरी क्षेत्र में मुगल सेना का जमावड़ा देख तथा भीषण युद्ध होने का आभास होने पर बाबा जी ने धरती पर अपने खंडे से एक रेखा खींचकर पुकारा कि वही इस रेखा को पार करे जो अपने गुरुधाम की मान-मर्यादा की रक्षा हेतु रणक्षेत्र में प्राण न्यौछावर करने के लिए तैयार है। सभी सिक्ख उस रेखा को पार कर गए।

इतिहासकारों के अनुसार जंग के मैदान तक पहुंचते-पहुंचते सिक्ख सेना की गिनती पांच हजार तक पहुंच गई थी। दूसरी तरफ लाहौर का फौजदार पच्चीस हजार फ़ौज लेकर पहुंच चुका था। इस घमासान युद्ध में सिक्ख इतनी बहादुरी और साहस के साथ लड़े कि दुश्मनों के छक्के छूट गए। इसी दौरान जहान खान का साथी अतायी खान भी अपनी फौज लेकर मैदान-ए-जंग में आ पहुंचा। मुगलों को खदेड़ते हुए अनेक सिक्ख शहीद हो गए। इसी दौरान बाबा दीप सिंघ जी की गर्दन पर एक घातक वार हुआ और शीश धड़ से अलग हो गया। बाबा दीप सिंघ जी अपने बाएं हाथ की हथेली पर शीश रखकर दाएं हाथ से खंडा चलाते हुए, जालिमों को मौत के घाट उतारते हुए तेजी से श्री हरिमंदर साहिब की ओर बढ़ते गए। इस अद्भुत दृश्य को देखकर रणभूमि में डटी विरोधी सेना इस कद्र भयभीत हुई कि तौबा-तौबा करती हुई मैदान-ए-जंग छोड़कर भागने लगी। इस अद्भुत कौतुक से सिक्खों का मनोबल तीव्रता से बढ़ता गया। बाबा जी के कुशल नेतृत्व में अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए सिक्ख सेना श्री हरिमंदर साहिब पहुंच गई। बाबा दीप सिंघ जी ने श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में अपना शीश अर्पित कर अमर शहादत प्राप्त की।

श्री हरिमंदर साहिब की मान-मर्यादा की खातिर जहां परिक्रमा में बाबा दीप सिंघ जी ने शीश भेंट किया वहां उनकी पावन स्मृति में गुरुद्वारा साहिब शोभित है। जहां पर उनकी देह का अंतिम संस्कार किया गया वहां पर वर्तमान में 'गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब बाबा दीप सिंघ जी शहीद' स्थित है। आपका पवित्र खंडा श्री अकाल तख्त साहिब पर सुशोभित शस्त्रों में समाहित है।

"जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ" की मूल भावना को चरितार्थ करने वाले, भक्ति और शक्ति की अद्भुत मिसाल धन्य-धन्य बाबा दीप सिंघ जी, जिन्होंने ७५ वर्ष की आयु में विलक्षण कारनामा कर दिखाया, को कोटि-कोटि प्रणाम! उनकी बहुमुखी प्रतिभा एवं अतुलनीय शहादत की बदौलत विश्व भर में सिक्खों को विलक्षण पहचान एवं मान-सम्मान हासिल है। ऐसे ही महापुरुषों के आगमन से जननी और जन्मभूमि धन्य हो जाती है।

'जापु साहिब' का भगवान

–स. नरिंदर सिंघ सोच (दिवंगत)

कभी किसी पुत्र ने जनता को दुखी देख कर अपने पिता से यह नहीं कहा कि आप कुर्बान होकर लोगों को सुखी करो। कभी किसी पिता ने अपने पुत्रों को अपने हाथों से तैयार कर जंग की आग में झोंक कर ललकार कर यह नहीं कहा कि बच्चो! दशमेश पिता के पुत्रों को सभी वार सीने पर लगते हैं, पीठ पर कोई वार नहीं लग सकता। बहादुरी अधिक से अधिक वार खाकर शहीद होने में है। कभी किसी गुरु ने अपने अनुयायियों की अपने बच्चों को भूखा नहीं रखा। कभी किसी के पिता के शहीद शरीर का दाह संस्कार, अलग-अलग स्थान पर और अलग-अलग समय में, धड़ का कहीं और शीश का किसी अन्य जगह पर नहीं हुआ। कभी किसी दादी ने छोटे-छोटे बच्चों को उनके शहीद दादा और जांबाज पिता की रक्त-रंजित साखियां सुना कर शहीद होने के लिए नहीं भेजा। कभी किसी जरनैल ने बाईधार के राजाओं के घेरे में, दाँतों के घेरे में जुबान की तरह रह कर, लड़ाई लड़ते हुए साथ-साथ न साहित्य-रचना की और न दूसरों को साहित्य रचने पर लगाया है। कभी किसी युगपुरुष ने इतने कम समय में गरीब, सदियों से दबे-कुचले और लताड़े हुए लोगों को बहादुर, आत्मसम्मानी और साहसी नहीं बनाया। कभी किसी गुरु ने अपने शिष्यों को सबके सामने तेग हाथ में लेकर परखा नहीं और न लहू से सिंचित तेग लेकर बार-बार (पाँच बार) ललकारा है। कभी किसी गुरु ने बंदूक की शक्ति परखने के लिए अपने प्यारे सिक्खों को सीना तान कर निशाना बनने के लिए नहीं कहा है और न ही स्नान करते-करते अर्ध में स्नान छोड़ कर पिता-पुत्र सामने होने के लिए धक्कामुक्की करते देखे गए हैं। जैसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की इतिहास को और कौम को एक महान देन है, उससे भी बड़ी उनकी धर्म-क्षेत्र देन है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज ने 'जापु साहिब' में जिस प्रकार ईश्वर को अनुभव किया है, वो बड़ा आसान है, प्रेरक है। जिसने गरीबों की रक्षा के लिए हथियार सजाए हैं, मजलूमों के बचाव के लिए शस्त्र, धारण किये हैं, हथियारों को अपने जीवन का एक अंग बना लिया है, जो हर समय कमरकस्सा (कमरबंद) कर, पहरेदार बन कर रातें काटता है, वो प्रभु का रूप है। उसे गुरु जी नमस्कार करते हैं। वो नमो 'शसत्र पाणे' है। शस्त्र को पहनना एक बात है, धारण करना एक और बात है, परन्तु शस्त्र पाकर आनंदित होना एक बिल्कुल ही अलग बात है। शस्त्र का आनंद लेना एक मनोरंजन है, एक सुंदर खेल है। यह खेल क्रोध और घृणा से ऊँचा है, अपने और बेगाने से दूर होता है। इसमें जीत और हार नहीं होती, इसमें आशा और तृष्णा नहीं होती, यह कर्मों का फल नहीं मांगता, यह कर्म करता हुआ भी अकर्म होता है।

शरीर एक कर्म है। जब तक शरीर है, कर्म जारी रहेंगे। साँस लेना, रक्त-परिभ्रमण होना, जागना, सोना, उठना-बैठना और खेलना ऐसे सैकड़ो कर्म हैं परन्तु कभी किसी ने कहा है कि मैं लोगों के भले के लिए साँस ले रहा हूं, मैं दिल का पंप चलाता-चलाता थक गया हूं। ये सभी कर्म होते हैं परन्तु ये सभी स्वाभाविक हैं। जब कर्म स्वाभाविक हो जाएँ, निर्मल पानी के स्रोत की तरह उछल-उछल कर बहें, फिर ये बंधन नहीं बनते। इन कर्मों के बिना न अपना फ़र्ज़ अदा होता है और न दूसरे का भला हो सकता है। कोई तीरंदाज़ अपने तीरों को सोना लगा कर नहीं चलाता, क्योंकि वो तीरों को पाकर आनंदविभोर नहीं है। जो तीरों को पाकर आनंदविभोर नहीं हैं वे 'नमो असतर माणे' नहीं हो सकते।

भाई गुरदास जी ने एक साखी लिखी है— अम्ब्रीक भक्त ने व्रत रखा। दुर्वासा ऋषि ने देर कर दी कि अम्ब्रीक भक्त अपना व्रत न खोल सके। नेमी भक्त ने व्रत खोल लिया। नेमी इंसान नियम कैसे तोड़ सकता था! दुर्वासा श्राप देने को दौड़ा। भक्त की रक्षा करने के लिए उसके पीछे सुदर्शन चक्कर छोड़ दिया। आगे-आगे दुर्वासा दौड़ रहा है, पीछे-पीछे थोड़ी दूरी पर सुदर्शन चक्कर पीछा करता आ रहा है। तीनों लोकों में जाकर सभी देवताओं ने मिन्नत की, लेकिन किसी ने भी क्रोधी और अन्यायी दुर्वासा को बचाया नहीं। आखिर वो अम्ब्रीक भक्त के चरणों पर गिरा और उसने सुदर्शन चक्कर से उसकी रक्षा की। (वार १० : ४) इस प्रकार की रक्षा करना, इस प्रकार हथियारों को चलाना, जिससे सारी जनता ख़ुश हो, शस्त्रों को पाकर हर्षित होना है। ज़ालिमों को आगे लगाकर दौड़ाना यह भक्ति है, यह पूजा है, यह ज्ञान है, उपासना है, यह दान है, यह व्रत है, यह स्व-भक्ति है, यह मानवीय आरती है, यह 'दैवी कीर्तन सोहिला' है।

बहादुरो और योद्धाओं का मंदिर सच्चाई के लिए लड़ी जंग के मैदान में होता है। वे फूलों के हार लेकर इस मंदिर में नहीं जाते, उनके अपने शीश हथेली पर रखे होते हैं। लोग तृष्णा और ममता के लिए सारी उम्र जंग करते हैं, लेकिन वे सुख, आराम, प्राप्तियाँ, तृष्णा को अपने हाथों कत्ल करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। लोग अपने बच्चों के लिए पूरे संसार को ज़िबह कर सकते हैं। वे गरीबों को भूखे मार कर अपने बच्चों को ऐश्वर्य भरपूर जीवन दिलाने को जीवन की सबसे बड़ी प्राप्ति समझते हैं, लेकिन जापु साहिब के कर्ता अपने बच्चों को कुर्बान कर 'जीवत कई हज़ार' कह कर उच्च स्वर में नारा लगाते हैं। उनकी लड़ाई दोहरी होती है। वे अपने अंदर छिपी बुराइयों के संग लड़ते हैं और बाहर बुरे लोगों के साथ जंग करते हैं। इन जंगों को दशमेश जी की नमस्कार है। ऐसी जंग लड़ना जंग नहीं, आध्यात्मिक कर्म है, अस्टांग है, नवधा भक्ति है, प्रभु से मिलने का संक्षिप्त और सीधा रास्ता है। यह पगडंडी नहीं, मार्ग है। इस मार्ग पर अकेले नहीं, सारा परिवार बेड़े (बलिदान-मार्ग) पर चढ़ाया जा सकता है। इस मार्ग पर कौमें कंधे के साथ कंधा मिला कर इकट्ठे चल सकती हैं। यहाँ नाक नहीं रगड़े जाते, आत्मसम्मान बनाए रखा जाता है। यहाँ हाथ नहीं जोड़े जाते, खंडे चलाए

जाते हैं। यहाँ मिन्नतें नहीं की जाती, ललकारा जाता है। यहाँ हथियारों के शोर के संगीत को सुना जाता है। यहाँ ऊँचे योग के अनुसार आँखें खोल कर शत्रु को ढेर कर दिया जाता है। इसी कारण जापु साहिब में एक ओर मंदिर है, जहाँ 'युद्ध' को भी नमस्कार है— *"नमो जुध जुधे॥"*

इस मंदिर में केवल उसी की भक्ति स्वीकार होती है, जो अपने खून का आखिरी कतरा भी बहा दे। आधे मन के साथ नहीं, पूरे तान और शक्ति के साथ जो लड़े वह भी प्रभु है, उसी को कहा है— "नमो सरब त्राणे॥"

वह पूजा के योग्य है जो "हरीफ़ुल शिकंन" है।

वह भी पूजा को योग्य है जो "हिरासुल फिकंन है।"

वह भी पूजा के योग्य है जो "ग़नीमुल ख़िराज" है।

वह भी पूजा के योग्य है जो "ग़रीबुल परसतै" है।

निरभउ (निर्भय) होना सही अर्थों में निरभउ (अकाल) का पुजारी होना है। जो निरभउ नहीं हुआ, उसने निरभउ को याद भी नहीं किया। निरभउ होना अमरता का सच्चा एहसास है, सही अर्थों में अध्यात्मी होना है। निरभउ होने में चारों मुक्तियां हैं— यह सादेश मुक्ति भी है, समीप मुक्ति है, साजुज्ज मुक्ति भी है और स्वरूप मुक्ति भी है। निरभउ साधन भी है और प्राप्ति भी है। निरवैर (निर्वैर) होने का पहला डंडा निरभउ होना है। डर पाप की जड़ है। डर के मारे बरगद की छाया के तले कोई अच्छा पौधा न पैदा हो सकता है, न फल दे सकता है। जिसके पास आत्मिक बल नहीं, जिसके पास शारीरिक शक्ति नहीं, जिसके पास नैतिक ताकत नहीं, वह निरभउ कैसे हो सकता है? निरभउ होना जांनिसार लोगों का स्वभाव है, त्यागी लोगों की प्राप्ति है, सच्चे लोगों की सम्मति है। यह पाँच प्यारों का प्रसाद है, भाई तारू सिंघ जी का शीत प्रसाद है, भाई दिआला जी की उष्णता है, भाई मनी सिंघ जी का धैर्य है। इसकी बाहरी निशानियाँ हैं— निडर आँखें, निडर हाथ, निडर कान, निडर पैर, निडर शरीर, निडर मन, निडर चित्त, निडर बुद्धि और निडर विश्वास। जहाँ पाँव डगमगा जाएँ, आँखें भयानक दृश्य से डर कर झपक जाएँ, बुद्धि का तीक्ष्ण वृक्ष काँटा बन जाये, विश्वास परिवर्तित हो जाये, वह निडर नहीं। जापु साहिब के प्रभु को "अनझं गात" और "नमसतं अभीते" कहा है। उसका शरीर काँपता नहीं। वह बुज़दिल नहीं होता, भयभीत नहीं हो सकता। भक्त ने भी कहा है कि मेरा जब मन ही नहीं विचलित होता तो फिर शरीर कैसे शिथिल पड़ सकता है। जिन दानों (अनाज)को खूंटी (चक्की के मध्य में स्थित) का सहारा नहीं, वे अवश्य डरते हैं, मगर जो खूंटी के सहारे हैं, जिस खूंटी ने डरावने (चक्की के) पाटों को बाँध कर रखा है, उन्हें डरने की क्या आवश्यकता है?

'जापु साहिब' के ईश्वर का नाम "सलीखत मुकामै" है। यह "काइम दाइम सदा पातशाही" है, यह ईश्वरीय सत्ता है, यह अटल राज है, यह अविभाज्य दल है, यह युगो-युग में चली आ रही पीढ़ी है। इसने कभी सिक्का नहीं बदला। इसका कभी विधान तबदील नहीं हुआ। इसकी हदें कभी आगे-पीछे नहीं हुईं। इस राज में कभी युगगर्दी नहीं आई। यह अमर ज्योति युगों से इसी तरह प्रज्वलित

है। यह न बढ़ती है, न घटती है, इसकी बत्ती, इसका तेल असीम है। इसकी रौशनी को कोई बाधा रोक नहीं सकती, घेरे में लेकर बंद नहीं कर सकती। इसीलिए 'जापु साहिब' के कर्ता कहते हैं कि मेरे ईश्वर का कोई मजहब नहीं। जहाँ अलग-अलग मजहब हो जाते हैं, वहां ईश्वर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। माँ अपने जीवित पुत्र के टुकड़े कर बाँटने को तैयार नहीं हो सकती। वह सारा पुत्र दूसरे के हवाले कर सकती है, मगर उसे मार नहीं सकती।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी केवल उस ईश्वर को माथा टेक सकते हैं, जिसका कोई मजहब नहीं। "नमसतं अमजहबे" 'जापु साहिब' की नमस्कार है। 'जापु साहिब' के ईश्वर का न कोई दायां हाथ है, न बायां हाथ है, न उसकी कोई दायीं आँख है, न बायीं आँख है। उसकी दोनों आँखों में एक ही रहमत है, उसके दोनों हाथों में एक ही बरकत है। वहां किसी का अलग दर्जा नहीं। जो ईश्वर को किसी का निकटवर्ती और किसी को दुत्कारने वाला समझते हैं, उन्होंने ईश्वर को अपना सगा बाप और दूसरों का सौतेला बाप बताया है। यह ईश्वर का यश नहीं मगर मूर्खों ने अपयश को यश समझ कर वर्णन किया है। 'जापु साहिब' का ईश्वर "निरबामे" है और उसे इसीलिए माथा टेका है कि वह किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। वह "नमसतं निरबामे" है।

'जापु साहिब' का ईश्वर "एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक" हैं, इसीलिए वह "अनेकुल तरंग" है, इसीलिए उसे "नमसतं अजूपे" कहा है। वह जुआ नहीं, अविश्वासी नहीं। उसका रूप निर्देशन है, मार्गदर्शन है। सही दिशा में जाने की आवाज़ वो जमीर में से देता है। हमें पत्थरों जैसी बाधाओं को तोड़ कर लावा की भांति फूट कर बह निकलना है। उसकी धीमी-सी आवाज़ को भी बड़े-बड़े ढोल आदि दबा नहीं सकते। यही आवाज़ ज़ालिम हाकिम की छाती पर बैठ कर उसकी चीखें निकलवा देती है, उसके लिए भूतने और जिन्न का रूप धारण कर लेती है, भयानक सपने का रूप धारण कर नींद हराम कर देती है, सारे सुख-चैन और आराम ख़त्म कर देती है, इसीलिए 'जापु साहिब' के कर्ता ने इस ईश्वरीय आवाज़ को भी नमस्कार की है। "नमसतं त्रिदेसे" भी है और 'नमो बीज बीजे" भी वही है, "नमो ब्रिंद ब्रिंदे" भी वही है। वह बीजों का प्रारंभिक बीज है। वह समूह भी है। सौ करोड़ भी वही है। एक बीज और दस अरब ये एक वस्तु के दो पक्ष हैं।

नैतिक साहस शुभ आचरण का फल है। ज़ालिम पापियों के सवा लाख लश्कर के साथ केवल एक शुभ आचरण वाला लड़ता है। अंधकार के साथ एक दीया शानदार लड़ाई लड़ सकता है और जीत सकता है। शेर की एक गर्जना के साथ पूरे जंगल में दौड़भाग शुरू हो जाती है। इसी साहस का परिणाम शहीद होने वाला पुत्र, जान बचाने के लिए कागज का टुकड़ा लेकर आई माँ से कहता है, "यह मेरी माँ नहीं। अगर माँ होती तो मुझे अधर्मी बना कर मारने को तैयार न हो जाती।" इसी शक्ति के सहारे छोटे-छोटे साहिबज़ादों ने सरहिंद के सूबे को कठोर जवाब दिए जिस कारण सुच्चा नंद ने कहा, "ये छोटे सपोलिए (साँप के बच्चे) हैं। उगती

हुई दूभ कांटे से भी ज्यादा तीखी होती है। बड़े होकर ये हमारे लिए मुसीबत बनेंगे।" इसी बल के कारण भाई मनी सिंघ जी ने कहा था, "आपको तो बंद-बंद काटने का हुक्म दिया है, इसलिए उंगलियों के जोड़ों से काटना शुरू करो। तुम्हें अवज्ञा नहीं करनी चाहिए।"

इख़लाक सत्य व संयम की दिन-रात की मेहनत द्वारा पलता और जवान होता है। फिर यह चट्टान बन जाता है। कोई तूफान इसे हिला नहीं सकता। भाई गुरदास जी ने उचित ही कहा है कि भट्टी में जाकर कच्चे दाने ही चटकते हैं, भुने हुए दानों का कुछ नहीं बिगड़ता। तूफान पुराने और केवल पीले पत्तों को तोड़ कर उड़ा सकता है, पहाड़ को नहीं हिला सकता। 'जापु साहिब' का ईश्वर एक सुंदर जुर्रत है, एक हिम्मत की सुंदरता है। यह जुर्रत देख कर लोग दंग रह जाते हैं, मुँह में उंगलियाँ डालते हैं। इस हिम्मत के चमत्कार द्वारा सारा सिक्ख और सूफ़ी इतिहास भरा पड़ा है। इसी के सहारे बच्चा प्रहलाद खड़ा हो जाता है, ध्रुव भक्त एक केंद्र बन कर सारे साम्राज्य को चक्कर में डाल सकता है। गली में खड़ा फ़कीर ललकार कर कहता है, "भाई बुधू का आवा कच्चा है।" ऐसी जुर्रत ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन हैं। इसी जुर्रत के सहारे कौमें फख्र महसूस करती हैं और इतिहास बनाती हैं। 'जापु साहिब' में यह जुर्रत ईश्वर का नूर है, प्रेरणा का स्रोत है:

कि जुरअति जमाल हैं॥

इस जुर्रत की जड़ गहरे ईमान में है। वो ईमान नहीं जो एक रस्म रह जाता है, जो प्राणहीन प्रतिमा होता है। इसकी जड़ें शरीर में भी होती हैं, परन्तु यह फैला मन में होता है। बुद्धि और चित्त का यह सहारा होता है। खनिज पदार्थ यह आत्मा और परमात्मा के मिलन से लेता है। इसकी सुंदर शाखाएं पूरे ब्रह्मांड में फैली होती हैं। इस ईमान के वृक्ष को कोई काट नहीं सकता, जड़हीन नहीं कर सकता, क्योंकि इसने अमृत-पान किया होता है। जिस धर्म के सहारे माताएं अपने बच्चों के टुकड़े करवा कर शुक्र मनाती हैं, चक्की पीसती हुई भी चढ़दी कला में रहती हैं, यह सारी शक्ति गहरे विश्वास में है। 'जापु साहिब' का ईश्वर "अमीकुल इमा हैं", गहरा भरोसा और गहरा विश्वास है।

उसका एक गुण अनदेखा करना भी है। उसकी बख़्शिश का दरवाज़ा और भंडारा बड़ा विशाल है। वो पिछली गलतियां क्षमा कर गले से लगाता है। उसका धर्म क्या है? 'आडीठ धरम' और 'अतिढीठ करम' अनदेखा करना कैसे कर्मों को? अति ढीठ कर्मों को, अति बेशर्म कर्मों को। परन्तु कोई पूरे का पूरा दर पर झुक जाए तो, जिसे भूख नहीं, बाहर पड़ा अनाज उसके किसी काम नहीं। जिसे साँस लेने की ज़रूरत ही नहीं, बाहरी आक्सीजन उसके अंदर अपने आप नहीं जा सकती। बाहर उसकी अनन्त शक्तियां हैं, परन्तु बिना मांगे प्राप्त नहीं हो सकती।

'जापु साहिब' का ईश्वर नीरस नहीं है। वो चंद्रमाओं में से वो चांद है, जो सब चन्द्रमाओं को ठंडा कर पूरे ब्रह्मांड में शान्ति फैला देता है। वो स्वयं सूर्य नहीं, इन सूर्यों का महा सूर्य है। ये जो सूर्य एक-एक ब्रह्मांड बना कर बैठे हुए हैं, ये उस

महासूर्य में से निकली चिंगारियां हैं। इन सबमें उसकी ज्योति है। उसकी ज्योति ने उनको रोशन किया हुआ है।

'जापु साहिब' का ईश्वर दिन के समय भी चमकता है, रात के समय पूरे आकाश पर कब्ज़ा जमा कर बैठा होता है। वह रात को लुकाछिपी भी खेलता है। वह "नमो सूरज सूरजे" है। वो "नमो चंद्र चंद्रे" है।

'जापु साहिब' का ईश्वर कलाकार है। वो सभी गीतों का प्रारंभिक गीत है। सभी तानों की वह बुनियादी सरगम है, सभी नृत्यों के पीछे उसका महानृत्य है। सभी मुद्राओं के पीछे उसका नूरानी चेहरा है, हसीन पोज़ है। सभी रागों और ठाठ की वो जड़ है। वह श्रुति भी है, नाद भी है, सरगम भी है, तान और खिरन भी है, मींड भी है। वो गमकार भी है। जापु साहिब का ईश्वर जबरन सजदा ले लेता है :

नमो गीत गीते॥
नमो तान ताने॥४७॥
नमो न्रित्त न्रित्ते॥
नमो नाद नादे॥...
नमसतसतु रागे॥

वह रागों में राग, नृत्यों में नृत्य और कविता में अलंकार है। वह एक अनोखी दौलत है। वह सभी कलाम का मालिक है। वह सर्ववक्ता है। वह इल्मों का बादशाह है, सारी विद्या का दाता और स्रोत है। सभी सुंदर शरीर उसके हैं। सारा हुस्न उसी की चमक है। वह शब्दों का मूल है, धार्मिक शब्दावली की निरुक्त है। मानव की सभी मूल प्रेरणाओं का वही स्रोत है। वह एक अनोखा अनुभव है। वह दिमाग़ों का स्वामी है :

कि सरबं कलीमै॥...
कि आकल अलामै॥
कि साहिब कलामै॥१२०॥...
निरुकत सरूप हैं॥...
त्रिभुगत सरूप हैं॥...
कि साहिब दिमाग़ हैं॥
कि हुसनल चराग़ हैं॥१५१॥

'जापु साहिब' का ईश्वर परम विचार है, परम ज्ञान है, परम बुद्धता है। यह मनोकल्पित नहीं, बल्कि सधा हुआ सिद्धांत है। आखिर में कहा है कि इसके जैसा चारों तरफ़ निवास करता हुआ और कौतुक करता हुआ ईश्वर हर समय मेरे अंग-संग रहे! यही अविनाशी दौलत है। 'जापु साहिब' सिक्खी का स्वर-मंडल है। इस पर ज़रा भी ध्यान की मिज़राब लगाएं तो यह रबाब, ब्रह्मांडीय साज़ गूँज उठता है। पूरे वातावरण को सुर में कर हमारी चेतना को अपने में लीन कर लेता है :

कि परमं फ़हीमै॥...
सदा अंग संगे
अभंगं बिभूते॥

'जापु साहिब' अमृत छकाते समय पढ़ी जाने वाली बाणियों में से एक बाणी है, इसीलिए अमृतधारी शहीदों के जीवन में इसका बड़ा योगदान है। 'जापु साहिब' का ईश्वर जब तक रग़-ओ-रेशे में न समाया हो, तब तक इस मार्ग पर कोई एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता।

गुरबाणी में तन-मन प्रफुल्लित करने वाली बसंत ऋतु की प्रेरणा

*–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी कोमल भावनाओं और प्रेमसिक्त दृष्टि के युगनायक थे। परमात्मा और परमात्मा की रची हुई सृष्टि के कण-कण से उन्हें अनुराग था। उनका प्रकृति-प्रेम उनके सम्पूर्ण जीवन में विशेष परिलक्षित हुआ। गुरु साहिब सदैव प्रकृति के निकट रहे। अपनी धर्म प्रचार-यात्राओं में वे जहां भी गये किसी नदी के तट को, किसी बाग़ को, किसी शांत रमणीक स्थान को अपना ठिकाना बनाया। प्रकृति में उन्हें परमात्मा के विस्मयजनक रूप के दर्शन होते रहे और इस विस्मय के साथ उन्होंने मानव समाज को भी जोड़ा। अपनी बाणी में भी उन्होंने प्रकृति के मनोहर रूपों के दर्शन कराये। उनके लिये प्रकृति के निकट जाना, परमात्मा के निकट जाना था। बदलते महीनों, मौसमों, ऋतुओं को श्री गुरु नानक साहिब ने परमात्मा के साथ मन जोड़ने का माध्यम बनाया। इस परम्परा को श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है। गुरबाणी में माह, वार और दिन के साथ ही ऋतुओं का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। चैत्र और बैसाख के महीनों को बसंत ऋतु का काल माना गया है।

हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु जीउ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२७)

बसंत ऋतु को श्री गुरु अरजन देव जी ने सरस ऋतु कहा। यह ऋतु सुख प्रदान करने वाली है। इस ऋतु में सर्वत्र परमात्मा का रचा हुआ ऐसा अनुपम सौंदर्य देखने को मिलता है कि मन और तन दोनों ही प्रफुल्लित हो उठते हैं, सांसें महकने लगती हैं। ऐसा तब होता है जब इस ऋतु की सरसता में परमात्मा की कृपा के दर्शन होने लग जाते हैं, मन परमात्मा की महानता से संतृप्त हो जाता है। मन में परमात्मा के लिये आभार की भावना उत्पन्न हो जाती है कि उसने इतना सुंदर समय उपहारस्वरूप दिया है। बसंत ऋतु में मन की अवस्था को श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी की निम्न एक पंक्ति से भली-भांति समझा जा सकता है :

वडभागि पाइआ दुखु गवाइआ भई पूरन आस जीउ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२८)

प्रकृति की रमणीक रचना में परमात्मा के दर्शन कर लेना बड़े सौभाग्य का प्रतीक होता है। सारे दुख-संताप मिट जाते हैं, समस्त मनोकामनायें पूरी हो जाती हैं अर्थात् मन संतृप्त हो जाता है। एक

**ई– १७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९*

नवेली आस जन्म लेती है जिससे आनंद की अनुभूति होने लगती है। यह सच्चा आनंद है, सच्ची उपलब्धि है, जिसके साथ गुरु साहिब ने जोड़ा। इसका मतलब है कि मनुष्य सांसारिक उपलब्धियों से न तो आनंद प्राप्त कर सकता है और न उसके दुख दूर हो सकते हैं। सुख उसमें है जो परमात्मा प्रदान कर रहा है। सुख प्रदान करने का उसका अपना ढंग है। उसकी रचनाओं, उसके द्वारा पैदा की गई जीवन-अवस्थाओं में सुख ही सुख है, क्योंकि इन्हें मनुष्य एक याचक की तरह दान में प्राप्त करता है, जबकि अपनी प्राप्तियों में उसका अहंकार भी शामिल हो जाता है, जो मूल रूप से दुख का जनक है। बसंत ऋतु का आनंद भी अपने मन में बसे अहंकार को दूर करके ही अनुभव किया जा सकता है।

भोलिआ हउमै सुरति विसारि॥
हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६८)

श्री गुरु नानक देव जी ने बसंत ऋतु के आनंद से जुड़ने योग्य अवस्था का वर्णन करते हुए कहा है कि अबोध मनुष्य अहंकार, विकारों से बाहर निकल कर आये। वह परमात्मा के गुणों का चिंतन करे कि उसे कैसी सुंदर जीवन-व्यवस्था प्राप्त हुई है। परमात्मा कितना उदार है कि उसके जीवन को ख़ुशियों से भर रहा है। ऐसे ही गुण उसे भी धारण करने चाहिये ताकि वह परमात्मा की कृपा का पात्र बन सके। बसंत ऋतु में वनस्पतियां हरी-भरी हो जाती हैं, वृक्ष फूलों से लद जाते हैं। ये हमें संदेश देते हैं कि जीवन कैसे जीना है।

करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु॥
पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६८)

जैसे वनस्पतियों की शोभा प्रकट हो रही है वैसा ही मनुष्य का जीवन हो सकता है जिसकी शोभा दूर-दूर तक दृष्टिगोचर हो। मनुष्य को स्वयं न बताना पड़े कि वह क्या है। उसके गुण अपने आप प्रत्यक्ष हों। इसके लिये वह सुकर्म करे। सुकर्म उसके जीवन का वह वृक्ष बन जायेंगे जिसकी शाखायें धर्म से हरी-भरी हो जायेंगी। कर्म ही उसका धर्म बन जायेंगे। उसे किसी आडंबर, पाखंड की आवश्यकता नहीं रह जायेगी। वह गुरु के ज्ञान को धारण करके ही जान सकता है कि सुकर्म क्या हैं। मनुष्य के सुकर्म ही उसके जीवन-वृक्ष में फल और फूल के रूप में परिवर्तित होते हैं। बसंत ऋतु में वृक्षों की शोभा उन पर उग आये हरे-भरे पत्तों से बढ़ जाती है । वृक्ष मानों जीवंत हो उठते हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा कि गुरु का ज्ञान जहां सुकर्मों की प्रेरणा बनता है वहीं परमात्मा की ऐसे प्रतीति होने लगती है जैसे हरे-भरे पत्तों से वृक्ष भर गया हो। इस प्रतीति के प्रभाव से मन के सारे विकार दूर हो जाते हैं और मन निर्मल हो जाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने परमात्मा की प्रतीति को पत्तों की घनी छांव कहा, जो तपते हुए दुखों में शीतलता बन जाती है। इस शीतलता की प्राप्ति के

लिये मनुष्य को तीन स्तरों पर एक साथ यत्नशील होना पड़ता है।

अखी कुदरति कंनी बाणी मुखि आखणु सचु नामु॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६८)

मनुष्य अपनी आंखों से प्रकृति के दर्शन करे, कानों से गुरु का शबद सुने और मुख से परमात्मा का नाम जपे। परमात्मा सर्वव्यापक है, सृष्टि के कण-कण में बसा हुआ है। इस तरह वह निकट से भी निकट है। संसार में मनुष्य परमात्मा का रूप देखे तो उसकी जीवन-दिशा ही बदल जायेगी। सभी से उसका प्रेमपूर्ण संबंध बन जायेगा। इससे मन के सारे आवेग शांत हो जायेंगे और संतोष प्राप्त होगा। संसार में माया का शोर चारों ओर व्याप्त है जिससे मनुष्य भ्रमित हो रहा है। इससे वह परमात्मा से दूर होता जा रहा है। दूसरी बात कि मनुष्य मात्र गुरु के ज्ञान को सुने, उस पर विश्वास करे और अंतर्मन में धारण करे। इससे वह माया के भ्रम-जाल से बच जायेगा, परमात्मा में मन टिकने लगेगा। उसका तीसरा यत्न हो कि याद में सदा परमात्मा का नाम रहे। वह किसी की निंदा, किसी का अपमान न करे, सभी के प्रति आदर रखे। उसके कर्मों में सच प्रकट हो। जब वह मन, वचन और कर्म से सच का धारक हो जायेगा, उसे आनंद के लिये आने-जाने वाले महीनों, ऋतुओं के भरोसे नहीं रहना पड़ेगा। वह सदैव के लिये बसंत की सुहानी ऋतु सृजित कर लेगा, सदैव ही उसके जीवन में बसंत का आनंद व्याप्त रहेगा।

माहा रुती आवणा वेखहु करम कमाइ॥
नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब,पन्ना ११६८)

कौन नहीं चाहता कि बसंत ऋतु सदैव बनी रहे, हर ओर सदैव हरियाली रहे, किन्तु ऐसा होता नहीं है। ऋतुएं बदलती रहती हैं। बसंत है तो पतझड़ भी आयेगा। ठंड है तो गर्मी भी आने वाली है। श्री गुरु नानक देव जी ने कहा कि यदि मन परमात्मा में रमा रहे तो बसंत जैसी प्रफुल्लता सदैव बनी रहती है। श्री गुरु अंगद देव जी ने कहा कि मनुष्य परमात्मा को मन में बसा ले, जैसे सुहागिन कामिनी के मन में उसका पति बसा होता है :

नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु॥
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७९१)

जैसा प्रेम, समर्पण एक नारी का अपने पति के प्रति होता है वैसा ही प्रेम और समर्पण मनुष्य का परमात्मा के प्रति हो। इसी में सम्पूर्ण सुख और आनंद है। जैसे अपने पति से दूर नारी दुख भोगती है वैसे ही परमात्मा से दूर हुआ मनुष्य दुख सहता रहता है। बसंत की ऋतु आने से प्रफुल्लता उत्पन्न होती है किन्तु परमात्मा-प्रदत्त प्रफुल्लता उससे पूर्व की है।

पहिल बसंतै आगमनि पहिला मउलिउ सोइ॥
जितु मउलिऐ सभ मउलि ऐ तिसहि न मउलिहु कोइ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७९१)

परमात्मा ही सबको प्रफुल्लित करने वाला है। बसंत ऋतु की शोभा भी उसकी ही रची हुई है। क्यों

न मनुष्य बसंत की शोभा से प्रफुल्लित होने के स्थान पर परमात्मा को मन में बसा ले जिससे सारा संसार प्रफुल्लित हो रहा है! इसका सीधा आशय था कि श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य को केवल प्रकृति-प्रेमी नहीं, प्रकृति का उदाहरण देकर परमात्मा का प्रेमी बनाना चाहते थे। मात्र प्रकृति के सौंदर्य तक सीमित रह जाना विलास था और प्रकृति के सौंदर्य से होते हुए परमात्मा के सौंदर्य तक पहुँच जाना भक्ति था, जिससे जीवन का उद्धार होना है।

रुति आईले सरस बसंत माहि ॥
रंगि राते रवहि सि तेरै चाइ ॥
किसु पूज चड़ावउ लगउ पाइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११६८)

श्री गुरु नानक देव जी ने कहा कि मन में तो बसंत ऋतु की शोभा देख कर परमात्मा के प्रति आभार, श्रद्धा और प्रेम की भावना पैदा होनी चाहिये कि उसने ऐसा सुखद काल प्रदान किया है। मन में उसकी भक्ति का चाव बढ़ जाना चाहिये। परमात्मा के अतिरिक्त और कौन है जो ऐसा आनंद दे सकता है! जीवन में ऐसी सरसता भर सकता है! इसलिये और कौन है जिसकी मनुष्य पूजा करे ! जिसके समक्ष सिर निवाये! एकमात्र परमात्मा ही है जो दुखों से दूर करने वाला और सुख देने वाला है।

जब मनुष्य को यह बोध हो जाये कि सच्चा सुखदाता परमात्मा है तो वह सुख से आगे बढ़ कर सुखदाता का हो जाता है। उसे सुख की इच्छा नहीं रहती। वह सुखदाता का संग पाने को उत्सुक हो जाता है। यह आत्मिक अवस्था के श्रेष्ठ हो जाने का प्रतीक है। श्री गुरु अमरदास जी ने इसे नई दृष्टि से देखा।

बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥
इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥
तुम्ह साचु धिआवहु मुगध मना ॥१ ॥
तां सुखु पावहु मेरे मना ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११७६)

बसंत ऋतु आने पर वनस्पतियां हरी-भरी हो जाती हैं, फूलों और फलों से वृक्ष लद जाते हैं, किन्तु मनुष्य का मन बसंत के आने से नहीं, सतिगुरु, परमात्मा का संग करने से आनंद प्राप्त करता है। जिनके मन में गुरु, परमात्मा के प्रति प्रेम-भाव नहीं है उनके लिये बसंत की प्रफुल्लता भी निरर्थक हो जाती है— *" इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ॥ इहु मनु जलिआ दूजै दोइ ॥"* श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि बसंत की शोभा एवं उल्लास वनस्पतियों और मनुष्यों की प्रसन्नता के मिलने से बनता है।

बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥
एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११७६)

गुरु साहिब ने अद्भुत कल्पना की। जब बसंत ऋतु के आने से वनस्पतियां अपने यौवन पर हों, फूलों के शृंगार से धरती महक रही हो और परमात्मा से जुड़ कर सारे जीवों के मन आनंदित

हो रहे हों तो सर्वत्र आनंद ही आनंद होगा। यह आनंद परमात्मा की यत्र-तत्र-सर्वत्र व्याप्त महिमा के कारण ही सम्भव हो पाता है। परमात्मा ही वनस्पतियों की हरियाली में है, फूलों के मोहक रंगों में है, वातावरण की सुगंध में है, उल्लास से भरे लोगों के मन में है।

मउली धरती मउलिआ अकासु॥
घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु॥१॥
राजा रामु मउलिआ अनत भाइ॥
जह देखउ तह रहिआ समाइ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९३)

भक्त कबीर जी ने उपरोक्त बाणी में परमात्मा की व्यापकता के दर्शन कराये जो सुख और आनंद बन कर प्रकट हो रही है। परमात्मा धरती में भी है और आकाश में भी है। वह सृष्टि के कण-कण में है। परमात्मा मनुष्य के अंतरमन में भी प्रकाशित हो रहा है। वही सुख का स्रोत है, इसीलिये वह अनंत रूपों में सुख और आनंद प्रदान कर रहा है। बसंत ऋतु आनंद का काल है क्योंकि परमात्मा इस ऋतु को अपनी उपस्थिति से आनंद का काल बना रहा है। श्री गुरु नानक देव जी ने इसे स्पष्टता प्रदान की ताकि मनुष्य के मन में कोई भ्रम न रहे।

आपे भवरा फूल बेलि॥
आपे संगति मीत मेलि॥१॥
ऐसी भवरा बासु ले॥
तरवर फूले बन हरे॥१॥रहाउ॥
आपे कवला कंतु आपि॥
आपे रावे सबदि थापि॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९०)

परमात्मा ही तना है, शाखा है, परमात्मा ही उस पर खिला हुआ फ़ूल है और परमात्मा ही उस फूल पर मंडरा रहा भंवरा है। परमात्मा ही मनुष्य को गुरु के साथ जोड़ने वाला है और वही मनुष्य को उसके उद्धार का मार्ग दिखाने वाला है। परमात्मा ही भंवरा बन कर फूलों की सुगंध को सार्थक कर रहा है और मनुष्य को भंवरे जैसी आसक्ति से गुण धारण करने हेतु प्रेरित कर रहा है। जैसे पेड़-पौधे जीवंत हो उठे हैं और चारों ओर हरियाली छा गई है, वैसे ही गुण धारण करने से जीवन में सजीवता आ जाती है। यह परमात्मा की कृपा से ही हो पाता है। श्री गुरु नानक देव जी ने एक अत्यंत ध्यान देने योग्य बात कही है :

तू आपे करता करण जोगु॥
निहकेवलु राजन सुखी लोगु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११९०)

श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि परमात्मा ही पूरे ब्रह्माण्ड में एकमात्र कर्ता है। संसार में जो भी हो रहा है वह परमात्मा ही कर रहा है, उसी की इच्छा और बल से हो रहा है। किसी अन्य का सृष्टि के संचालन, गतिविधियों में कोई हस्तक्षेप नहीं है। दूसरी बात यह कि एक परमात्मा ही है जिसमें सृष्टि के संचालन की योग्यता है। किसी अन्य में ऐसी योग्यता लेश मात्र भी नहीं है। इसके बाद श्री गुरु नानक साहिब ने मन को आश्वस्त करने वाली

अनमोल बात कही कि परमात्मा ऐसा राजा है जिसके राज में उसकी प्रजा के सभी लोग सुखपूर्वक जीवन जी रहे हैं। जिसे इस बात पर विश्वास नहीं होता और जो द्वैत भाव में रहता है उसका जीवन अंधकारमय हो जाता है, दुखों से भर जाता है – *" दुबिधा दुरमति अधुली कार॥ मनमुखि भरमै मझि गुबार॥"* इसका भाव है कि जो मनुष्य स्वयं को परमात्मा की प्रजा नहीं मानता और उसके राज्य के नियमों, मर्यादा का पालन नहीं करता। वह कुबुद्धिवश पाप-कर्म करता है और भारी दुख भोगता है। मनुष्य को सुख चाहिये तो उसे परमात्मा के राज्य का अनुशासित नागरिक बन कर रहना होगा। परमात्मा के राज्य का अनुशासन क्या है, मर्यादा क्या है, यह गुरु की शरण में आकर ही जानी जा सकती है– "गुर करणी बिनु भरमु न भागै॥" गुरु का ज्ञान धारण किये बिना सच और झूठ का भेद नहीं किया जा सकता।

श्री गुरु अरजन देव जी ने बसंत ऋतु की सरसता, शोभा को आत्मिक सुधार और उन्नति के एक अवसर के रूप में देखा :

देखु फूल फूल फूले॥
अहं तिआगि तिआगे॥
चरन कमल पागे॥
तुम मिलहु प्रभ सभागे॥
हरि चेति मन मेरे॥ रहाउ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११८५)

बसंत ऋतु आ गई है। चारों ओर फूल ही फूल खिल उठे हैं और वे अपने रूप व सुगंध से अद्भुत दृश्य सृजित कर रहे हैं। कठोर से कठोर मन भी इस मनोहारी दृश्य को देख कर रस से भरे बिना नहीं रह सकता। इस प्राकृतिक सुंदरता को देख कर मन निर्मल हो जाता है। मन की सारी दुर्भावनायें, कठोरतायें त्याग कर ही मनुष्य इसका आनंद ले सकता है। निर्मल मन इसमें परमात्मा की कृपा को देखता है और उसका स्मरण कर भावना से भर उठता है। सौभाग्य से ही यह प्रेरणा प्राप्त होती है और मनुष्य के लिये बसंत का मनोहर दृश्य परमात्मा से मेल का माध्यम बन जाता है। जो मन इस मनोहारी शोभा से भीगता नहीं है वह दुखों में ही जीता रहता है। मनुष्य बसंत ऋतु के साथ ऐसा जुड़े कि उसकी तन-मन की अवस्था सदा के लिये बदल जाये और प्रफुल्लता से जीवन भर जाये– *"बसंत रुति आई॥ परफूलता रहे॥"*

प्रत्येक ऋतु की अपनी उपज होती है। हर बीज किसी ख़ास ऋतु में बोये जाने पर ही उगता है। वर्तमान काल में केवल नाम का बीज ही बोया जा सकता है– *" इकु नामु बोवहु बोवहु॥"* यह जीवन कोई अन्य बीज बोने का नहीं है– *"अन रूति नाही नाही॥"* परमात्मा के नाम का सुमिरन करने में ही उद्धार है– *"जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे॥"*

असहयोग की अद्भुत मिसाल : चाबियों का मोर्चा

–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल' *

बीसवीं शताब्दी का तीसरा दशक सिक्ख धर्म के लिए बहुत महत्वपूर्ण समय था। यह वो दौर था जब पंजाब सहित पूरे भारत में 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' चली। १५ नवंबर, १९२० ई. को 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' की स्थापना की गई। एक महीने बाद ही 'शिरोमणि अकाली दल' का गठन हुआ। इनके नेतृत्व में सिक्ख समाज ने समस्त गुरुद्वारा साहिबान को महंतों के कुप्रबंध से मुक्त कराने के लिए एक विराट जन आंदोलन आरंभ किया जो एक नवंबर १९२५ ई. को 'गुरुद्वारा एक्ट' लागू होने के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

समस्या की पृष्ठभूमि : दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एवं बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पश्चात सन् १७२० से लेकर १७८० ई. तक का समय सिक्खों के लिए जबरदस्त संघर्ष का समय था। सिक्ख जंगलों में रहकर छापामार युद्ध जारी रखे हुए थे। ऐसे में गुरुधामों का प्रबंध उदासी संप्रदाय के संतों-महंतों के हाथ में दे दिया गया। महंतों ने लंबे समय तक गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल की।

महाराजा रणजीत सिंघ के काल में भी यही व्यवस्था लागू रही। महाराजा के दौर में गुरुधामों की इमारतों और संपत्तियों का बड़े पैमाने पर निर्माण हुआ। जब गुरुद्वारा साहिबान में धन एवं संपत्ति की अधिकता हो गई तो महंत पथ-भ्रष्ट होते चले गये।

अंग्रेजों के पंजाब पर अधिकार के बाद अंग्रेजों ने महंतों को अपनी ओर मिलाकर गुरुद्वारा साहिबान पर नियंत्रण करने के प्रयास शुरू कर दिये। महंतों ने भी गुरुधामों की अथाह सम्पत्ति को हथियाने के उद्देश्य से अंग्रेजों की कठपुतली बनना स्वीकार कर लिया।

ऐसे विपरीत माहौल में गुरुद्वारा साहिबान में गुरु-मर्यादा भंग हो गई और वे महंतों के भोग-विलास के अड्डे बन गये।

सिक्ख समाज इस कुप्रबंध और विलासिता से अत्यंत व्यथित था। गुरुद्वारा साहिबान को मुक्त कराने और गुरु-मर्यादा को पुनः स्थापित करने हेतु एक बड़ा जन आंदोलन छेड़ने का निश्चय किया गया।

विभिन्न मोर्चे : सन् १९२१ से लेकर १९२५ ई.

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१

तक 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' के अन्तर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और शिरोमणि अकाली दल के नेतृत्व में अनेक मोर्चे लगाये गये और प्रत्येक मोर्चे में असहयोग एवं सत्याग्रह के मार्ग पर चलते हुए सिक्ख संगत ने अद्भुत सफलता प्राप्त की।

गुरुद्वारा साहिब बाबे दी बेर का मोर्चा, मोर्चा गुरुद्वारा पंजा साहिब, मोर्चा गुरुद्वारा ननकाणा साहिब, मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग, गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो का मोर्चा आदि इस आंदोलन के प्रमुख मोर्चे हैं। इन्हीं मोर्चों में से एक प्रमुख एवं महत्वपूर्ण मोर्चा है– 'चाबियों का मोर्चा' ।

प्रथम असहयोग आंदोलन : चाबियों का मोर्चा : अंग्रेज सरकार से श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब से संबंधित तोशाखाना आदि की चाबियां लेने के लिए जो संघर्ष किया गया वह सिक्ख इतिहास में 'चाबियों का मोर्चा' कहलाता है। यह मोर्चा १९ अक्तूबर, १९२१ से लेकर १० जनवरी, १९२२ तक चला।

अंग्रेज सरकार ने २० अप्रैल, १९२१ को श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब का प्रबंध सिक्खों के हवाले कर दिया था, परन्तु यहाँ के तोशाखाना की चाबियां अभी सिक्ख पंथ को नहीं मिली थीं। चाबियां अभी सरकार के पास ही थीं।

अक्तूबर, १९२१ ई. में सरदार सुंदर सिंघ मजीठिया के इस्तीफ़ा देने के बाद बाबा खड़क सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान चुने गये। बाबा जी के नेतृत्व में १९ अक्तूबर, १९२१ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की एक बैठक हुई, जिसमें अंग्रेज सरकार से श्री दरबार साहिब की चाबियों की मांग की गई। इस बैठक में सरदार सुंदर सिंघ रामगढ़िया भी शामिल थे।

अंग्रेज सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सिक्खों का प्रतिनिधि न मानते हुए चाबियां देने से इन्कार कर दिया। यही नहीं, सरकार ने ६ नवंबर, १९२१ ई. को स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया से चाबियां लेकर अपने कब्जे में कर लीं और उनकी जगह एक नया सरबराह नियुक्त कर दिया गया।

सिक्ख पंथ ने नवनियुक्त सरबराह कैप्टन बहादर सिंघ को मानने से इन्कार कर दिया। १२ नवंबर को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने फैसला किया कि नये सरबराह को गुरुद्वारा-प्रबंध में दखल न देने दिया जाये।

इससे एक दिन पूर्व ११ नवंबर को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सरकार के विरुद्ध असहयोग करने का प्रस्ताव पारित किया और यह निर्णय लिया गया कि श्री अमृतसर साहिब आ रहे प्रिंस ऑफ वेल्स का बहिष्कार किया जाये और पूरे नगर में हड़ताल रखी जाये।

मोर्चे के प्रमुख कारण : १५ नवंबर को श्री गुरु

नानक देव जी के प्रकाश-पर्व पर अंग्रेजों द्वारा नियुक्त नया सरबराह कैप्टन बहादर सिंघ श्री अमृतसर साहिब आया, परन्तु भारी विरोध के कारण उसे वापस लौटना पड़ा।

अंग्रेज सरकार ने अपनी स्थिति-स्पष्ट के उद्देश्य से अजनाला शहर में २६ नवंबर को एक जलसे के आयोजन की घोषणा कर डाली। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने भी जवाब में उसी दिन अजनाला में अपने जलसे की घोषणा कर दी। अंग्रेज सरकार ने २४ नवंबर को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जलसे पर पाबंदी लगा दी।

२६ नवंबर को अजनाला में सरकार ने अपना जलसा तो किया मगर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का जलसा न होने दिया। जब अकालियों ने जलसा करना चाहा तो सरदार दान सिंघ, सरदार जसवंत सिंघ झबाल, सरदार तेजा सिंघ समुंदरी, बाबा खड़क सिंघ, सरदार महिताब सिंघ आदि नेताओं सहित अनेक अकालियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

मोर्चे का आरंभ : इन गिरफ्तारियों से संघर्ष में एक दम और तेज़ी आ गई। गुरु का बाग और श्री अकाल तख़्त साहिब पर रोज़ दीवान लगने लगे। साथ ही गिरफ़्तारियां भी दी जाने लगीं। अजनाला में गिरफ्तार किये गये सिक्ख नेताओं पर मुकद्दमा चलाया गया और उन्हें ६-६ महीने की क़ैद दे दी गई।

जल्द ही कांग्रेस और खिलाफत कमेटी ने भी इस मोर्चे का समर्थन कर दिया। अनेक देशभक्त श्री अकाल तख़्त साहिब पर हाज़िर होने लगे और खुद को गिरफ्तारियों के लिए पेश करने लगे। एक जनवरी, १९२२ ई. को बेदी, सोढी तथा भल्ला भाईचारे ने भी अपनी कान्फ्रेंस के माध्यम से मोर्चे का समर्थन कर दिया और अंग्रेज सरकार के विरुद्ध संघर्ष करने का प्रस्ताव पारित कर दिया।

इसी दौरान खालसा कॉलेज, श्री अमृतसर साहिब के अध्यापकों ने भी सरकार के विरुद्ध प्रस्ताव पारित कर दिये।

अंग्रेज सरकार का झुकना : जनमत विरुद्ध होता देख अंग्रेज सरकार ने १९२२ ई. में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाशोत्सव पर चाबियां सिक्ख पंथ को देनी चाहीं, परंतु सिक्खों ने चाबियां लेने से इन्कार कर दिया और पहले सभी गिरफ्तार सिक्ख नेताओं की रिहाई की मांग की। आखिर सरकार ने ११ जनवरी को गिरफ्तार किये गये सिक्ख नेताओं को रिहा करने के आदेश दे दिये। १९ जनवरी को रिहा हुए सिक्ख नेता श्री अमृतसर साहिब पहुंचे।

अंग्रेज सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर चाबियां श्री अकाल तख्त साहिब के सामने बाबा खड़क सिंघ को सौंप दीं।

इस मोर्चे को आज़ादी का पहला संघर्ष तथा प्रथम असहयोग आंदोलन माना गया और मोर्चा फतह होने पर सिक्खों को बधाई दी गई।

गुरुद्वारा श्री टोका साहिब पातशाही दसवीं

–डॉ. परमवीर सिंघ*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की याद में सुशोभित गुरुद्वारा श्री टोका साहिब हिमाचल प्रदेश के सिरमौर ज़िले में काला अंब से लगभग ६ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और यहाँ से ही आगे ९ किलोमीटर की दूरी पर नारायणगढ़ स्थित है। सत्रहवीं सदी में यह स्थान राजा मेदनी प्रकाश के अधीन सिरमौर रियासत में स्थित था। जब मेदनी प्रकाश ने गढ़वाल के राजा फतह शाह और कहलूर के राजा भीम चंद से ख़तरा महसूस किया तो उसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अपनी रियासत में आने के लिए न्योता भेजा था। उसकी विनती स्वीकार कर गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब से सिरमौर रियासत में गए थे। रून नदी के तट पर राजा मेदनी प्रकाश और उसके दरबारी गुरु जी के स्वागत के लिए इस स्थान पर पहुँचे थे। सिरमौर रियासत के इस स्थान पर गुरु जी ने पहला पड़ाव किया था। जब गुरु जी पाउंटा साहिब से श्री अनंदपुर साहिब वापस गए थे तो उन्होंने तेरह दिन इस स्थान पर पड़ाव किया था और फिर सिक्ख उस स्थान की सेवा-संभाल करने लगे थे। भाई संतोख सिंघ लिखते हैं :

जहिं सतिगुर डेरा कियो त्रौदस दिवस टिकाइ।
अबि तिस थल महिं सिंघ नर जागा लई बनाइ।
अबि गुर जागा नाम को भाखति हैं टोका।
सिंघनि ते हम श्रोन सुन नहिं आंख बिलोका।

बाबा सुमेर सिंघ बताते हैं :

जह सतिगुर तेरह दिन रहे।
टोका नाम तहां मंजी रच सिक्खयन सेवा लहै।

गुरु जी की याद में इस स्थान पर कुछ सिक्ख एक झोंपड़ी बना कर निवास करने लगे। जिस स्थान पर गुरु जी ने निवास किया था, वहाँ पर एक चबूतरे का निर्माण कर उसे 'मंजी साहिब' कहा जाने लगा। यह स्थान गाँव की बाहरी सीमा में स्थित है और वर्तमान समय में यह गुरुधाम गाँव के नाम पर 'गुरुद्वारा श्री टोका साहिब पातशाही दसवीं' के तौर पर प्रसिद्धि प्राप्त कर गया है।

१९०४ ई. के सिरमौर गज़टियर में इस स्थान का वर्णन करते हुए बताया गया है कि १९वीं सदी के पूर्व काल के दौरान यह इलाका स. फतिह सिंघ आहलूवालिया के अधीन था, जिसने एक चबूतरे का निर्माण करवा कर १०० बीघा ज़मीन इसके नाम लगवाई थी और १०० मन गेहूँ

*सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला–१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२

पटियाला रियासत की तरफ से हर वर्ष भेजी जाती थी। भाई कान्ह सिंघ नाभा बताते हैं कि इस गाँव के रंघड़ों (राजपूत मुसलमान) ने गुरु जी के लश्कर के साथ चल रहे दो ऊँट चुरा लिए थे, जिस कारण उन्हें योग्य दंड दिया गया और गाँव का नाम 'टोटा' पड़ गया। स्थानीय परंपरा बताती है कि इनकी नीयत में खोट होने के कारण गुरु जी ने यह वचन कर दिया था कि इन्हें हमेशा 'तोटा' (अभाव)बना रहेगा, जिससे विकृत होकर यह शब्द 'टोटा' प्रचलित हो गया, परन्तु गुरुधाम का नाम 'गुरुद्वारा श्री टोका साहिब' ही प्रचलित रहा। गुरुद्वारा साहिब के नाम १०० बीघा ज़मीन रियासत नाहन की तरफ से और मीरपुर की १५० बीघा आहलूवालिया जागीरदारों की तरफ से है। रियासत पटियाला से ८५ रुपए सालाना मिलते हैं।

नाहन रियासत की तरफ से १०० बीघा ज़मीन भेंट करने की पुष्टि करते हुए स.परदुमण सिंघ बद्दों बताते हैं कि महाराजा रणजीत सिंघ भी यहाँ पर आए थे और उन्होंने यह इलाका जीत कर राजा फतिह सिंघ कपूरथला को दे दिया था, जिन्होंने इस स्थान पर एक कुएं और 'मंजी' की सेवा करवाई थी। कुएं पर अब भी एक प्राचीन लिखित मौजूद है जिस पर " ੧ਓ एक श्री अकाल सहाइ... बाबा फते सिंघ..." और कुछ उर्दू या फ़ारसी के शब्द उकेरे हुए हैं। कुएँ पर लगी हुई प्लेट पर लिखा हुआ है— "इस पवित्र स्थान पर नत्मस्तक होने के लिए महाराजा जस्सा सिंघ आहलूवालिया पधारे थे और इस कुएं की सेवा महाराजा फतिह सिंघ आहलूवालिया ने कराई थी।" १९३१ ई. में भाई धन्ना सिंघ इस स्थान पर एक पक्की मंजी साहिब, निशान साहिब और निकटस्थ एक कुटिया बताते हैं, जिसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश किया जाता था।

इस स्थान के ज्यादा विकसित न होने के कई कारण देखे जा सकते हैं, परन्तु उनमें से मुख्यतया यही प्रतीत होता है कि गाँव में लगभग २०० घर हैं, जबकि सिक्ख जनसंख्या कोई नहीं है। वर्तमान समय में हरियाणा और हिमाचल के सिक्खों की तरफ से इस स्थान की सेवा-संभाल की जा रही है। लगभग ५० गाँवों को इस गुरुधाम के साथ पक्के तौर पर जोड़ा गया है और प्रत्येक गाँव में से एक सदस्य लिया जाता है जो कि निष्काम भावना के साथ इस गुरुधाम की सेवा-संभाल में योगदान देता है। बहुत-से गाँव हरियाणा से सम्बन्धित हैं, परन्तु सेवा में सभी बराबर योगदान देते हैं। इसके अलावा गुरुद्वारा साहिब की समिति की माँग पर सरकार की तरफ से एक प्रबंधक भी लगाया गया है जो कि प्रबंध के समूचे लेखे-जोखे का कार्य करता है।

गुरुद्वारा साहिब के मुख्य सेवक सरदार महिंदर सिंघ ने बताया कि गुरुद्वारा साहिब की सेवा निरंतर चल रही है। पहले जो इमारत मौजूद

थी, उसकी हालत ठीक न होने के कारण संगत ने नई इमारत का निर्माण करने का फ़ैसला किया। फरवरी २०१७ ई. में इसकी आधारशिला रखी गई थी। नई इमारत का निर्माण कार सेवा संस्था की बजाय गुरुद्वारा समिति की तरफ से अपने स्तर पर ही किया जा रहा है। प्रत्येक समिति-सदस्य इस कार्य में योगदान देता है। इस स्थान पर गुरु जी के घोड़ों को बाँधने के लिए जामन के वृक्ष के खूंटे गाड़े गए थे, जो कि समय पाकर हरे हो गए थे और इनमें से अभी भी कुछ वृक्ष सुरक्षित हैं, जिनका संरक्षण किया गया है। इस स्थान से लगभग २०० मीटर की दूरी पर आम का एक प्राचीन वृक्ष मौजूद है जो कि गुरु जी द्वारा अपने हाथों से लगाया गया था, परन्तु समय पाकर यह वृक्ष नीचे गिर गया था। इस गिरे हुए वृक्ष का प्राचीन तना अभी भी मौजूद है, जिसमें से नई कोपलें फूट पड़ीं थीं, जिन्हें फल लगते हैं।

गुरुद्वारा साहिब के सरोवर के तट पर उस स्थान पर निर्माण-कार्य चल रहा, जहाँ सरदार फतिह सिंघ आहलूवालिया ने थड़ा (चबूतरा) बनवाया था। इस गुरुधाम के सामने शहीदों की यादगार बनी हुई है। कहा जाता है कि भंगाणी के युद्ध में जो सिंघ शहीद हुए थे, उनमें से दो इस स्थान पर अकाल प्रस्थान कर गए थे, जिनका अंतिम संस्कार गुरु जी ने अपने हाथों से किया था। सरोवर की परिक्रमा में सिक्ख इतिहास के दर्शन करवाती कुछ झांकियां विद्यमान हैं।

वर्तमान समय में गुरुद्वारा साहिब के पास १६८ बीघा ज़मीन मौजूद है, जिसमें से लगभग १६ बीघा ज़मीन पर दरबार हॉल, दीवान हॉल, लंगर हॉल, सरोवर, यात्रियों और स्टॉफ के लिए कमरे व हॉल एवं पार्किंग आदि बने हुए हैं। इसके अलावा ९ एकड़ कृषि-कार्य योग्य ज़मीन हरियाणा में है। आस-पास के गाँवों से संगत यहाँ निरंतर हाज़िरी भरती है और बहुत-से श्रद्धालु विशेषतया इस स्थान के दर्शन करने के लिए आते हैं। निष्काम भावना के साथ सेवा की रुचि के अधीन प्रबंधक यात्रियों की सेवा करने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। समूह गुरुपर्व और पूर्णिमा मनायी जाती है। बैसाखी को विशेष जोड़-मेला होता है और आम दिनों में इतवार वाले दिन संगत बड़ी संख्या में यहाँ दर्शन करने के लिए आती है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १३ दिन इस स्थान पर निवास किया था। अमृत बेला में स्नान कर गुरु जी निकट ही एक टिब्बे (टीला) पर प्रभु-बंदगी और सुमिरन करने के लिए चले जाते थे। गुरु जी की याद में यहाँ 'तप-स्थान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज' सुशोभित है। यहाँ पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया हुआ है। गुरुद्वारा श्री टोका साहिब के दर्शन करने के लिए आने वाली संगत यहाँ भी हाज़िरी भरती है।

पटना साहिब तथा निकटवर्ती जिलों में बसते सिक्ख

–स. जगमोहन सिंघ*

बिहार राज्य में बसते सिक्ख अलग-अलग पृष्टभूमि के साथ सबन्ध रखते थे। कुछ सिक्ख श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु तेग बहादर जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय से पंजाब से इधर आए। इनमें से कई प्रकार के व्यापारी और पेशावर भी थे। यहाँ के स्थानीय लोगों में से ज्यादातर लोगों ने सिक्खी को नानक-पंथियों के रूप में अपनाया। जहाँ तक सिक्खी के साथ निकटता की बात है, गत डेढ़ सौ वर्ष में यहाँ से बहुत-से नानक-पंथी धीरे-धीरे लुप्त हो गए हैं। तब से ही बिहार में सिक्खी की प्रफुल्लता कम होती जा रही है और कठिन दौर में से गुज़र रही है। कुछ सिक्खों ने आज भी अपना अस्तित्व कायम रखा है और अपने आप को सिक्खी स्वरूप में सुरक्षित रखा है।

यहाँ मैं उन सिक्खों की बात कर रहा हूँ जो वास्तव में पटना साहिब और इसके निकटवर्ती जिलों के साथ सबन्ध रखते हैं। इनके अति विलक्षण उदाहरण मिलते हैं। ये सिक्ख साधारण किसान से लेकर ज़मींदार तक हैं। इन्होंने अपनी सिक्खी वाली पहचान को बड़े फख्र के साथ संभाला हुआ है।

इनमें से कई सिक्ख ग्रंथी, कीर्तनिए, सेवादार और लांगरी हैं। ये तख़्त श्री हरिमंदर जी और पटना साहिब के अन्य गुरुद्वारा साहिबान में सेवा निभा रहे हैं। ऐसी अन्य धार्मिक सेवाओं की आवश्यकता पड़ने पर ये हमें विभिन्न गुरुद्वारा साहिबान में भी दिखाई दे जाते हैं, जैसे तख़्त श्री हजूर साहिब, झांसी, दिल्ली, कोटा, बठिंडा, मोगा, लुधियाना, पाकुर, राँची तथा अन्य कई स्थानों पर परिवार का ख़ास हिस्सा होने के बावजूद भी शायद ही हमारे में से ज्यादातर इनके बारे में कुछ जानते हों। इनके बारे में और ज्यादा जानकारी, पहचान, सयाचार और आधार के बारे में जानने के लिए जितना ही मैं इन स्थानों का दौरा करता हूँ, उतनी ही मेरी इनके प्रति रुचि बढ़ती जाती है। निरंतर यात्रा के दौरान मैंने पटना साहिब तथा अन्य कई गाँवों व छोटे कसबों में जाकर जानकारी प्राप्त की।

इस क्षेत्र में लंबे अरसे से निवास करते सिक्खों के संपर्क में आकर ये लोग लगातार सिक्खी की धारावाहिकता के साथ जुड़े हैं। कई लोगों ने बीसवीं सदी के मध्य-काल से सिक्खी जीवन को अपनाया है। १९३५ ई. में आए तबाहकुन भूकंप द्वारा तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब की इमारत को बहुत नुकसान पहुँचा था। ये सिक्ख इस पवित्र स्थान के साथ जुड़ कर कई प्रकार की

*गिल्ल अपार्टमेंट, १३/३, माल रोड, डुम डुम, कोलकाता-७०००८०, फोन : ९८३१९-०८९१२

सेवाएं करने लगे। इससे पूर्व इनमें कोई सिक्ख नहीं था, मगर हो सकता है कि ये लोग नानक-पंथी परंपरा को मानते हों। इसी झुकाव के कारण ही ये सिक्खी की तरफ प्रेरित हुए हों। लोग अलग-अलग पृष्ठभूमि के साथ सबन्ध रखते थे, मगर समय के साथ विचारधारा में उन्नति कर सिक्ख पंथ के साथ जुड़ गए। ये लोग सिक्ख भाईचारे के बराबर के हिस्सेदार बन गए। गुरु-घर के ग्रंथी और सेवादार बन कर फख्र महसूस करने लगे।

ये लोग आम तौर पर केवट, चन्द्रवंशी, कहार, पासवान, मछुआरा या निषाद राज, यादव, तेली, कुहार, रविदासी, गदेरी, कुर्मी, पाल, माझाकार या माली जातियों तथा कई बनिआ जाति से संबंधित थे। उच्च जाति के साथ सबन्ध रखने वाले, जैसे भूमिहार, राजपूत या ब्राह्मण भी गुरुद्वारा साहिब की सेवा में लग गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की 'लाडली फ़ौज' का अंग बन कर कई निहंग सिंघों वाला पहरावा पहनने लगे। आदरणीय जत्थेदार मान सिंघ आदि ने तख़्त साहिब के जत्थेदार के तौर पर सेवा निभाई, जो अपने स्थानीयधरातल से उठ कर सिक्खी की मुय धारा में शामिल हुए। ज्ञानी फौजा सिंघ ने इन स्थानों की सिक्खी के बारे में सितंबर १९६९ ई. में प्रकाशित 'गुरमति प्रकाश' में एक लेख लिखा था। उनके लेख में पंडित ज्ञानी केहर सिंघ की १९ अगस्त, १९६८ ई. में लिखी चिट्ठी भी प्रकाशित हुई। उन्होंने सिक्ख आबादी वाले कुछ गाँवों, जैसे— रानीपुर खिड़की, लक्षीपुर और मुज़फरपुर ज़िले से संबंधित दो गाँवों का भी वर्णन किया है।

प्रेरणा के स्त्रोत : गुरु साहिबान से ही स्थानीय लोगों में लगातार प्रेरणा का प्रवाह चलता था। पटना साहिब के महंतों, ग्रंथियों और अनगिनत उदासी डेरों के माध्यम से लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा। बीसवीं सदी में ज़िला गुजरात के मंडी बहाउद्दीन, पश्चिमी पंजाब (जो अब पाकिस्तान में है) के बाबा निश्चल सिंघ, जो बाद में यमुनानगर में बस गए थे तथा गुरुद्वारा दमदमा साहिब सुलतानपुर लोधी, कपूरथला के बाबा करतार सिंघ पटना साहिब में १९३४ ई. में आए भूकंप के बाद कार-सेवा आरंभ करने और इमारत दोबारा बनाने के लिए आए। तख़्त साहिब के पुनर्निर्माण के लिए कई सिक्ख संस्थाओं, जैसे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, कई सिक्ख महाराजा और सिक्ख शख़्सियतें सामने आईं। इन सिक्खों के प्रति गहन अध्ययन करने से पता चलता है कि तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब के मैनेजर ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने लोगों में सिक्खी सिद्धांतों को प्रचारित करने में अहम भूमिका निभाई। इनके कारण ही सामाजिक रुतबे के अनुसार ज़मींदारी से लेकर कई अन्य जाति के लोगों ने सिक्खी को अपनाया। राघवेंदरधारी सिंघ ने भी सिक्खी को अपनाया और उनके प्रभावाधीन बहुत-से लोगों ने सिक्ख धर्म ग्रहण किया। ये लोग पटना साहिब तथा निकटवर्ती जिलों से संबंधित लगभग प्रत्येक पृष्ठभूमि वाले थे। सभी ने सिक्ख धर्म को श्रद्धा के साथ अपनाया, जिसका प्रभाव स्थानीय लोगों पर भी पड़ा और उनमें भी नयी सोच का आग़ाज़ हुआ। ये सिक्ख हमेशा अपनी सिक्खी

परंपरा के मुताबिक तैयार-बर-तैयार रहते और आधुनिक हथियार भी रखते। स. क्रिशन नंदन सिंघ लगभग तीन बार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए, जिन्हें 'क्रिशना सरदार' भी कहते थे। स. गिरजेश सिंघ अरवल ज़िले के गाँव सोनभद्र के अपने अंतिम समय तक मुखिया रहे। कईयों ने अपनी निजी लड़ाई के लिए 'रघुवीर सेना' जैसी कोई जत्थेबंदी बनाने में भी पहलकदमी की। स. राघवेंदरधारी सिंघ का पूर्ण क्षेत्र पर प्रभाव था। प्रत्येक वर्ष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के गुरुपर्व और नगर कीर्तन के समय वे उचित प्रबंधन में ख़ास ध्यान देते थे, ताकि कोई बाहरी तत्व इस अवसर पर कोई समस्या न पैदा कर सके।

यहाँ हमें ज्ञानी गुरबचन सिंघ के बारे में और भी विस्तार सहित बात करनी चाहिए। १९३१ ई. में तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब के नाजुक हालात के समय वे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब के प्रचारक के रूप में यहाँ आए। उनकी निगरानी में उस समय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से 'बिहार सिक्ख मिशन' बनाया गया। १९६९ ई. तक वे नाना प्रकारी सेवाएं निभाने के लिए पटना साहिब आते रहे। उन्होंने अपनी आत्म-कथा में सिक्खी के प्रचार और हालात से संबंधित कई दिलचस्प बातें लिखी हैं। तख़्त साहिब की संपित्त की सुरक्षा के लिए उन्होंने अहम योगदान दिया और सिक्ख ऐतिहासिक स्थानों को कर्ज़-मुक्त करवा कर स्थिरता प्रदान की। ज्ञानी जी पंथ-रत्न मास्टर तारा सिंघ के निकटवर्ती भरोसेयोग्य सहयोगी थे।

मुझे ज्ञानी जी के बारे में ज्यादा जानकारी उनसे प्रभावित बुज़ुर्ग सिक्खों और कुछ आम लोगों से मिली, जिन्होंने ज्ञानी जी के कौमी जज़्बे की बातें सुनी थीं। ज्ञानी जी ने यह सेवा निष्काम सेवक के तौर पर बिना किसी स्वार्थ के निभाई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३०० वर्षीय प्रकाश पर्व से पूर्व तख़्त साहिब के मैनेजर के तौर पर सेवा आरंभ की। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से सेवा-मुक्त होने पर उन्होंने पहले मैनेजर स. गुरदिआल सिंघ के स्थान पर ६ दिसंबर, १९६५ ई. में सेवा संभाली थी। उन्होंने तख़्त साहिब के आस-पास की इमारतों की सेवा गुरुद्वारा गुरु का बाग़ की नयी इमारत, कन्या पाठशाला और गुरु तेग बहादर अकादमी की सेवा का कार्य संभाला। इस अवसर पर बहुत-सा गुरमति साहित्य प्रकाशित हुआ। वे तख़्त श्री पटना साहिब से सेवा-मुक्त होकर पंजाब चले गए थे। अब उनका परिवार श्री अमृतसर साहिब में निवास कर रहा है। मुझे यह जानकारी उनके पुत्र स. नरिंदर सिंघ से मिली, जिनका हवाला उनकी छोटी बहन के लड़कों— स. तजिंदर सिंघ और स. कुलदीप सिंघ से मिला। इस जानकारी की ताईद स. त्रिलोक सिंघ ने की, जिनके पिता जी तथा अन्य सिंघ उनके सहयोगी रहे थे। ज्ञानी गुरबचन सिंघ, कैप्टन भाग सिंघ ('सिक्ख रिविऊ' के संस्थापक) तथा कुछ अन्य गुरसिक्खों के साथ १९७१ ई. में बंगलादेश की आज़ादी के समय अन्य ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान की बड़ी तबाही का सर्वेक्षण करने

सामूहिक रूप से टीम बन कर गए थे।

लुधियाना ज़िला के लालतों कलाँ से भूतपूर्व फ़ौजी बाबा अजायब सिंघ ने भी लगातार साठ वर्ष तक प्रशंसनीय सेवा निभाई। १९५७ ई. से उन्होंने अपनी पृष्टभूमि के साथ कोई सबन्ध नहीं रखा। उनके नेतृत्व में राजगीरी में ऐतिहासिक गुरुद्वारा नानक कुंड या शीतल कुंड की इमारत बनी और वे अंतिम समय तक यहीं पर रहे। ब्रह्म-कुंड के मुख्य स्थान पर निशान साहिब भी स्थापित किया गया। बिहार शरीफ़ कसबे के भराओं पर में ग़ैरकानूनी ढंग से निवास कर रहे लोगों से उन्होंने गुरुद्वारा साहिब का कब्ज़ा छुड़वाया। पटना शहर बनने से पूर्व यह बिहार शरीफ़ शहर बिहार की राजधानी था।

बिहार शरीफ़ गुरुद्वारा साहिब की जगह के लिए नाजायज कब्ज़े हटाने की मुहिम के दौरान एक स्थानीय सिक्ख शिवदयाल सिंघ, जो कि कोइरी पृष्ठभूमि से संबंधित थे, शहीद हो गए। पचानवे वर्ष से भी अधिक आयु के बाबा अजायब सिंघ, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३५० वें प्रकाश पर्व से पूर्व ही ११ नवंबर, २०१६ ई. को अकाल प्रस्थान कर गए। मेरे साथ मुलाकात के दौरान उन्होंने अपनी इच्छा प्रकट की थी कि वे बिहार के गुरुद्वारा साहिबान व डेरों को ग़ैरकानूनी ढंग से बसे लोगों के कब्ज़े से मुक्त करवाना चाहते थे। उन्होंने गुरुद्वारा नानक कुंड तख़्त साहिब की कमेटी के हवाले कर दिया। डा. प्रताप सिंघ, निहंग प्रमुख बाबा संता सिंघ, स. जोगिंदर सिंघ 'जोगी' तथा अन्य ने भी इन स्थानीय सिक्खों को तख़्त साहिब कमेटी के साथ जोड़ने व कई प्रकार की सेवा के साथ जोड़ने की कोशिश की। ऐसे लगता है कि इन सभी ने यहाँ की सामाजिक बनावट को काफ़ी निकट से देखा। इन महान सिक्खों की अमूल्य सेवा के बारे में समूचे सिक्ख जगत को और अधिक जानकारी की ज़रूरत है।

पुनर्वास के संबंध में संक्षिप्त विचार : पवित्र तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब में नाना प्रकारी सेवाओं में व्यस्त ऐसे भाइयों से मैं अपनी प्रत्येक यात्रा में जानकारी लेता रहा हूँ। विस्तार सहित जानने की लालसा मुझे कई गाँवों में ले गई। ये इलाके पटना साहिब तथा इसके सौ किलोमीटर के घेरे में थे। इन गाँवों में ऐसे सेवादारों के परिवार रहते हैं। साधारण पुरुष घर से दूर कई तरह के काम-काज में व्यस्त रहते हैं। वे मात्र कुछ समय के लिए ही आते हैं, फिर अपने काम पर चले जाते हैं। यहाँ पता चलता है कि ये भाई मुख्य केंद्र से कितनी दूर हैं। फिर भी ये लोग धार्मिक, सांस्कृतिक विरासत और इतिहास के साथ जुड़ कर एक पुल का निर्माण करते हैं, हर पक्ष से सिक्खी के निकट आने का यत्न करते हैं। मैंने कभी सोचा नहीं था कि इन स्थानों की यात्रा इतनी आनंददायक होगी। कई दिलचस्प बातों के संबंध में चर्चा ज़रूरी है। यह बात पाठकों के नोट करने के लिए है कि मात्र ऐतिहासिक जानकारी के तौर पर पृष्ठभूमि का विवरण दिया गया है। अब ये सभी लोग खालसा पंथ का हिस्सा हैं और पृष्ठभूमि वाली बात बहुत हद तक ख़त्म हो गई है।

नालन्दा ज़िला : पहले हम नालन्दा ज़िले के

सिक्खों की बात करते हैं। ये अलग-अलग पृष्ठभूमि वाली जातियों के साथ सबन्ध रखते हैं। राजगीर (ज़िला नालन्दा) के उत्तर-पूरबी दिशा में लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर रामहरी गाँव में कुछ सिक्ख परिवार (केवट या निषाद राज पृष्ठभूमि वाले) रहते थे। यहाँ गुरु नानक मिशनरी केंद्र का कार्यालय है, परंतु अब यहाँ कोई काम-काज नहीं होता। तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब के भूतपूर्व महासचिव दिवंगत जोगिंदर सिंघ योगी ने यहाँ के स्थानीय सिक्ख स. तिरलोक सिंघ तथा अन्य सिक्खों की मदद से शुरू किया था। राजगीरी से बिहार शरीफ़ होते हुए नेशनल हाईवे-३१ से ४३ किलोमीटर दूर अरौत मोड़ (क्रॉसिंग) आता है। फिर हम अरौत गाँव की तरफ बांये मुड़े। यहाँ बीस सिक्ख परिवार रहते हैं। इनमें से ज़्यादातर काम के लिए झांसी की तरफ चले गए या फिर देश के अन्य स्थानों के गुरुद्वारा साहिबान की सेवाओं में जुड़े होने के कारण केवल स्त्रियों या बच्चों के साथ ही मुलाकात हो सकी। सत्तर वर्ष पूर्व इनके पूर्वज तख़्त साहिब पर मिस्त्री और मज़दूर के रूप में कार्य करते थे। उन पर बाबा भाग सिंघ का बड़ा प्रभाव था।

इन स्थानीय सिक्खों में स. जगदीश सिंघ ग्रंथी (केवट पृष्ठभूमि) और नाई पृष्टभूमि से स. रामदिओ सिंघ थे। स. जगदीश सिंघ और उनके भाइयों को बाबा निश्चल सिंघ से प्रेरणा मिली। वे पहिलवान भी थे। उन्होंने केवट भाईचारे के लोगों को सिक्खी अपनाने के लिए प्रेरित किया। अरौत के निकट सारथा गाँव में एक प्राचीन नानकशाही डेरा है। बनगाछा गाँव में कुछ सिक्ख परिवार रहते हैं। चंडी मोड़ क्रॉसिंग के निकट मल्ल बीघा गाँव से होती हुई मल्ल बीघा हाल्ट रेलवे लाइन गुज़रती है। यहाँ सबसे ज़्यादा सिक्ख बसते हैं। ३०० केवट पृष्ठभूमि वाले परिवारों में से ७० सिक्ख परिवार हैं और ज़्यादातर श्री हजूर साहिब में बसे हैं। इनमें से स. हीरा सिंघ प्रसिद्ध जत्थेदार थे। केवल स. राजू सिंघ ही वहाँ थे। वे छुट्टी पर आए थे और खेती का कार्य कर रहे थे। जब भी उन्हें छुट्टियाँ मिलती, वे खाली न बैठ कर अपने आप को खेती व इसके साथ जुड़े हुए अन्य कार्यों के साथ जोड़े रखते हैं। नालन्दा से बिहार शरीफ़ आते हुए, रास्ते में इसलामपुर ब्लाक के अधीन गाँव में हमने कुशवाहा मूल से सबन्धित परिवार देखे। इनमें शहीद शिवदयाल सिंघ के पोते स. रोशन सिंघ भी हैं। धर्मपुर और बीघापुर में केवट पृष्टभूमि से सबन्धित पंद्रह परिवार भी ढूँढे।

चंडी पुलिस स्टेशन के अधीन बिसनपुर गाँव में स. चन्दन सिंघ (चन्द्रवंशी पृष्ठभूमि वाले) कुछ सिक्ख परिवार बसते हैं। गोकुलपुर गाँव का एक कहार अथवा चन्द्रवंशी परिवार सिक्ख बन गया। शिलायो पुलिस स्टेशन के अधीन विक्षा के पास कुछ कुहार परिवार २५ गदेही या पाल (ऊन निकालने वाले) तथा महातों (कोइरी) पृष्ठभूमि वाले भी सिक्ख बने। इनमें से स. सुखा सिंघ सेवादार हैं और स. परसराम सिंघ ग्रंथी हैं। बाकी ज्यादातर गुरुद्वारा साहिब की सेवा में व्यस्त हैं। हसनी गाँव में केवल एक परिवार सिक्ख है। इसलामपुर लाक के अधीन चोरमा गाँव में कुहारों

के ७–८परिवार सिंघ सज गए हैं। लोधीपुर में पाल (गडेरी) समाज के २०-२५ परिवार, बिहार शरीफ़ क्षेत्र के रविदासिया समाज के २०-२५ परिवार और कुछ कुहार तथा महातो मूल के परिवार भी सिक्ख हैं। नालन्दा और कामदरागंज के मध्य भी सिक्ख परिवार (केवट) मिले हैं।

राजगीर के अलावा केवट मूल के सिक्ख विभिन्न गाँवों में रहते हैं, जैसे— तिलईआ, अरोपा गौढ़ (लिचरबारा तहसील), महद्दीपुरा (सरमीरा पुलिस थाना), गिर्याक (गिर्याक पुलिस थाना) राजगीर के निकट और गोरमा बस्ती (गिर्याक पुलिस थाना) के निकट। कराए परसूराज में कोइरी मूल के दो परिवार रहते हैं। थर्र-थर्री गुंजपुर (थर्र-थर्री पी. एस.) में दस कुहार पृष्ठभूमि वाले परिवार सिक्ख हैं। चन्द्रवंशी पृष्ठभूमि के ६-७ परिवार वन्नगाछा में पाए गए।

स. गोकुल सिंघ (गाँव गोकुलपुर), ज्ञानी अमरजीत सिंघ और स. शमशेर सिंघ (गाँव तेलमा), जो कुर्मी पृष्ठभूमि के साथ जुड़े हुए और कुछ नालन्दा जिले के सिंधवारा गांव से हैं, प्रसिद्ध सिक्ख हैं। नालन्दा के निकट गाँव जाफर से कुहार पृष्ठभूमि के साथ जुड़े राजगार गुरुद्वारा साहिब के स. मनजीत सिंघ और स. छोटू सिंघ हैं। बाबा अजायब सिंघ नालतों की निगरानी में ये लोग ऐतिहासिक राजगीर गुरुद्वारा साहिब की सेवा बड़ी लगन के साथ करते हैं। इसी जिले के गाँव हिलमा के बिंद जाति के स. राम रतन सिंघ अकेला 'खालसा पत्रिका' के संपादक हैं।

पटना ज़िला : यादव पृष्ठभूमि वाले कई सिक्ख आरंभ से पटना और मोतिहारी में मौजूद हैं। कुशवाहा पृष्ठभूमि से सबन्धित सिक्ख सोहावनपुर गाँव में हैं। कुछ समय पहले तक निषादराज या मछुआरा वर्ग के ३० सिक्ख परिवार पटना के निकट गाँव रानीपुर खिड़की में रहते थे। यहाँ कई महातो भी थे। अब ये परिवार कम होकर १५ के करीब रह गए हैं। ज्ञानी फौजा सिंघ की लिखित में इनका हवाला दिया गया है। फतूआ में विभिन्न जातियों से सबन्धित लगभग २५ परिवार सिक्ख बने हैं, जैसे पासवान, यादव, केवट, तेली और कुहार। पटना ज़िले के बाड़ के गुलालबाग में कुछ बनिआ गाँव छीवर के कुछ मिलीजुली जाति से सिंघ सजे थे।

बाड़ के प्राचीन गुरुद्वारा साहिब के भूतपूर्व हेड ग्रंथी कन्हईआ सिंघ कायमत मूल के टिकारी (गया) महाराज के दीवान ख़ानदान में से हैं। वे बाबा निश्चल सिंघ यमुनानगर वालों की प्रेरणा से सिंघ सजे थे। उनका विवाह इसी मूल की सिक्ख महिला बीबी कुलवंत कौर सुपुत्री संत सिंघ, समस्तीपुर के साथ हुआ था। एक अन्य स. शमशेर सिंघ का परिवार है। इनकी पृष्ठभूमि हलवाई वर्ग से सबंधित थी। उनके सुपुत्र भाई महेश सिंघ बाड़ गुरुद्वारा साहिब में ग्रंथी हैं। वे और उनके बाकी भाइयों ने बहुत शान के साथ सिक्खी संभाली हुई है।

हाजीपुर के निकट गंगा पार सोनपुर, हरीहर क्षेत्र में प्रत्येक वर्ष बड़ा मेला लगता है। यह कार्तिक की पूर्णमाशी को शुरू होता है और पंद्रह दिनों तक चलता है। प्राचीन समय से ही तख़्त श्री

पटना साहिब की तरफ से मुफ्त लंगर और साहित्य-वितरण का बंदोबस्त किया जाता है। ज्ञानी गुरबचन सिंघ स्थानीय सिक्खों स. जगदीश सिंघ आदि के साथ विभिन्न स्थानों पर जाकर गुरमति कैंप लगाते थे। उस समय नालन्दा पटना ज़िले का ही हिस्सा था। सोनपुर मेले में उदासी परंपरा के लोक-सेवा आश्रम की तरफ से प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णमाशी पर विशेष कार्यक्रम करवाए थे। पटना साहिब के भूतपूर्व जत्थेदार दिवंगत ज्ञानी मान सिंघ, निवासी चौंक शिकारपुर (पटना साहिब) तथा तख़्त साहिब के वर्तमान कथावाचक भाई दलजीत सिंघ दीदारगंज (पटना) भी स्थानीय आधारभूत से सबन्धित थे। हम गाँव वाखर-चक्क (पटना) के स. संज सिंघ रविदासिए से भी मिले। पटना से दस किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी गाँव है, जहाँ हमें तीन परिवारों के बारे में पता चला। एक अन्य परिवार (जो रविदासी आधार से) स. संजै कुमार सिंघ भक्क बथेरी गाँव के हैं। तकरीबन २० रविदासी आधारभूत वाले सिक्ख पटना साहिब तख़्त में रागी, चालक, कमरों की देखभाल तथा अन्य कई प्रकार के कार्य करते हैं। स. मंगल सिंघ जैसे लगभग छः राजपूत पृष्ठभूमि वाले परिवार बिन्दी बाज़ार पटना में रहते हैं।

दानापुर से ३० किलोमीटर दूर औरंगाबाद की दिशा में दुल्हन बाज़ार लाक के अधीन गाँव ऐनखाँ है। पटना ज़िले के लाक नौबतपुरा के आधीन गाँव आजमा और शेहरामपुर आते हैं। ऐनखाँ का इलाका स्थानीय भूमिहार जमींदारों के अधीन था। प्रसिद्ध सिक्ख स. राघवेंदरधारी सिंघ इस परिवार का प्रमुख था। यह स्थानीय सामंती प्रमुख श्री जंगधारी सिंघ का बेटा था, जिसकी सात सौ बीघा ज़मीन भिमरी चक्क मौजा में थी और हज़ारों बीघा ज़मीन निकटवर्ती गाँवों में थी। स्थानीय लोगों में उन्हें 'बबुआ जी' कहा जाता था। वे तथा पाँच अन्य लोग स. रामाशीष सिंघ (बेलदार), स. रामपूजन सिंघ (यादव), स. रामदेओ सिंघ (तांती), स. शिवबचन सिंघ (महातो) और स. शिवपूजन सिंघ (लाहौर) को तख़्त साहिब के मैनेजर ज्ञानी गुरबचन सिंघ ने १९६७ ई. में अपनी प्रेरणा द्वारा अमृत छकाया। यह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ३०० वर्षीय प्रकाश पर्व के समय की बात है। बाद में वे पटना साहिब की तख़्त समिति के उपाध्यक्ष भी थे। उनके नेतृत्व में इन गाँवों के बहुत लोक सिंघ सजे। उनकी निजी फ़ौज थी, जिसमें निहंग सिंघ थे, जो घुड़सवारी, निशानेबाज़ी, तीर-अन्दाज़ी, तलवारबाजी और लाठी द्वारा लड़ने में माहिर थे। उनका पैतृक किला अभी भी मौजूद है। उनके नेतृत्व में भूमिहार आधारभूत वाले स. हरभजन सिंघ ज़िला परिषद बोर्ड के सदस्य बने।

सिक्खी रिवायत के अनुसार यहाँ होला-मोहल्ला मनाया जाता था। स. राघवेंदरधारी सिंघ १९९० ई. में अकाल प्रस्थान कर गए। उनके अकाल प्रस्थान से यह सालाना मेला भी बंद हो गया। उनकी बेटी कुमकुम शर्मा ने इस रिवायत को भाई महिंदर प्रताप सिंघ से प्रेरित होकर कुछ समय के लिए चलाए रखा, मगर वो ज्यादा समय तक

इस विरासत को चला न सकी। सुनने में आया है कि वे किसी अन्य स्थान पर रहते हैं। इस महान व्यक्ति के निधन के बाद सिक्खों की संख्या बहुत कम हो गई।

ऐनखाँ में स. दुलारा सिंघ (बिहार स्टेट सायनारिटी कमीशन के कर्मचारी) स. श्रीकांत सिंघ, स. क्रिशना सिंघ तथा अन्य बुज़ुर्ग सिक्खों के साथ मुलाकात करने के पश्चात् इस बात का पता चला। अस्सी वर्ष से अधिक आयु वाले राम प्रसाद केसरी ने पुरानी नानक-पंथियों की परंपरा के साथ जुड़े होने की बात बतायी। उन्होंने बताया कि उसके पूर्वज जनक शाह आहा के अनैख उदासी मठ के साथ जुड़े थे। अन्य दो नानकशाही डेरे, एक आरा के गांगीपुर मठ और दूसरा, धरधा नदी के किनारे जहानाबाद के साथ भी जुड़े थे।

ऐनखाँ में ही भूमिहार, पासवान, यादव, सोनार, बेलदार नट्ट, रविदासिया, मुसाहर जैसी पृष्ठभूमि से लगभग ६०-७० लोगों ने सिक्खी को अपनाया। स. राघवेंदरधारी सिंघ भूमिहार मुखिया धीरज सिंघ के जमाई थे। कटईआपुर, कादिरगंज, भीमनगर, दुल्हन बाज़ार, पिरही, सोरमपुर, मजहौली, बालीपाखर, जमाई, बड़की, खवरा, छोटकी खरवा, कल्याणपुर, अयूआं, पाली-मसौड़ी, खपूरा (पालीगंज के निकट) व कई अन्य गाँवों में सिक्खी के दर्शन भी हो जाते हैं। ये सभी सिक्ख स. राघवेंदरधारी सिंघ के जत्थे में थे। इनमें से एक क्रिशना सरदार नामक सिक्ख पालीगंज के थे, जो अरवल से कई बार एम. एल. ए. निर्वाचित हुए। वे १८ मार्च, २०१६ ई. को अकाल प्रस्थान कर गए। उनके बारे में बिहार ख़ास कर पटना में एक मशहूर लोकोक्ति प्रसिद्ध थी— ''जब यह लंबे कद वाला सरदार (सिक्ख) अपने हथियारबंद साथियों के साथ पटना आता है तो लोग डरते हुए अपने घरों में घुस जाते।''

दानापुर-औरंगाबाद मार्गपर नौबतपुर लाक के अधीन अज़मा गाँव है। भाई बलदेव सिंघ (बड़े सहायक सीनियर ग्रंथी), स. अजायब सिंघ लांगरी, स. भूरी सिंघ सेवादार इस गाँव के हैं। इसी प्रकार चौधरी, पासवान, कुशवाहा पृष्ठभूमि वाले ५० सिक्ख परिवार भी हैं। इनमें से ज़्यादातर सिक्ख तख़्त साहिब के सेवादार हैं, जो अलग-अलग प्रकार की सेवा निभाते हैं या कई अन्य गुरुद्वारा साहिबान में भी कार्यरत हैं।

शहर रामपुर में २५-३० घर सिक्खों के हैं। तख़्त साहिब कमेटी की सरप्रस्ती में एक गुरुद्वारा साहिब भी है। यह ज़मीन इस गाँव के मुखिया लक्ष्मण शाह (मदहेसिया बनिया) ने महान राघवेंदरधारी सिंघ से प्रेरित होकर १९६९ ई. में दान की थी और इसकी रजिस्ट्री १९७१ ई. में हुई। १९७३ ई. में गुरुद्वारा साहिब का निर्माण तख़्त साहिब कमेटी द्वारा करवाया गया, जिसके लिए उन्होंने ७० हज़ार रुपए दिए और बाकी राशि स्थानीय सिक्खों द्वारा एकत्र की गई थी। भाई महिंदर प्रताप सिंघ मुख्य ग्रंथी हैं, जिनकी पृष्ठभूमि गिरि ब्राह्मणों से संबंधित है। वे रामानंद प्रताप सिंघ के पुत्र हैं और गाँव खपूरा के प्राचीन नानक-पंथी परिवार से हैं। भाई जी पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं, जिन्हें पाँच भाषाओं का ज्ञान प्राप्त है। यहाँ सिक्ख

भूमिहार, कुशवाहा, पासवान, रविदासिए, यादव, माली, लुहार, कंडू (साण), कुर्मी और कहार आधारभूत से हैं। स. रंगीनाथ सिंघ स्थानीय सिक्ख, एक नामी शख्सियत हैं। बिक्रम थाने के पतूत गाँव में ज्ञानी गुरबचन सिंघ के नेतृत्व में १९६७ ई. में गुरुद्वारा साहिब स्थापित करने के लिए निशान साहिब लगाया गया। पासवान पृष्ठभूमि से तकरीबन २० परिवार सिंघ सजे थे। अब निशान साहिब नहीं है। इस गाँव से बहुत-से सिक्ख रोज़गार की ख़ातिर बाहर चले गए हैं।

ज्यादातर रविदासिए सिक्ख पटना ज़िला के दुल्हन बाज़ार के ऐनखाँ के आस-पास से हैं। इनमें स. नरायण सिंघ (पिछला नाम तोता राम) निहंग सिंघ वेशभूषा धारण करते थे। उन्होंने दानापुर के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब हाँडी साहिब में निशान साहिब लगाने में अहम भूमिका निभाई। यह बात उनकी सुपुत्री ऊषा कहार (पत्नी स. दया सिंघ) से पता चली।

पटना ज़िले के गाँव जलबिघा में कुछ सिक्ख केवट पृष्ठभूमि वाले भी देखे गए हैं। सिक्ख नौबतपुर, बिक्रम, दुल्हन बाज़ार और पालीगंज पुलिस थानों के अधीन क्षेत्र में फैले हुए हैं। किशन सरदार का दोस्त लक्ष्मण सरदार बिक्रम पुलिस थाने के अधीन गाँव कबमीशरपुरा का है।

जहानाबाद, अरवल और गया : घन बिग्घा (जहानाबाद) में पाँच सिक्ख परिवार मिले हैं। कुरहता पुलिस थाने के अधीन कुछ गिनती में सिक्ख हैं। टेकारी (गया) में बढ़ई पृष्ठभूमि वाले कुछ परिवार हैं, जैसे कि गंगा सागर गाँव से स. भगत सिंघ और स. बजरंगी सिंघ। ये अपने परदादा स. मनोहर सिंघ के समय से सिंघ सजे थे। कुछ रविदासी पृष्ठभूमि वाले गाँव धनचक्की से, कुछ कोइरी पृष्ठभूमि वाले इमलियां चक्क में भी मिल जाते हैं। कुछ सिक्ख मोऊ गाँव में भी हैं। इनमें स. राम प्रवेश सिंघ (कुशवाहा पृष्टभूमि) पूर्व कर्मचारी तख़्त श्री पटना साहिब भी हैं। यहाँ एक पुरातन उदासी डेरे में हस्तलिखित श्री गुरु ग्रंथ साहिब आज भी विद्यमान है। दो परिवार गाँव सोनभद्र (अरवल) और एक परिवार एकरौंझा में है। ये भूमिहार पृष्ठिभूमि से हैं। इनमें स. गिरजेश सिंघ सोनभद्र के प्रमुख और बहुत प्रभावशाली थे। रणवीर सेना जैसी एक निजी फ़ौज स्थापित करने में इनकी अहम भूमिका थी। एकरौंझा के स. कमल सिंघ हिंदी व संस्कृत के ज्ञानी के बेटे हैं। इस गाँव से १० किलोमीटर दूर कारपी गाँव में कुछ परिवार रहते हैं।

वैशाली के पहले पृथक रूप से वर्णन किए गए शिवनगर के अलावा भी कई स्थानों पर सिक्ख परिवार बसते हैं। इनमें यादव पृष्ठभूमि वाले कुछ सिक्ख फतेहपुर लाक के जाफराबाद में भी हैं। इस प्रकार इन जिलों के अन्य कई गाँवों में भी कुछ ऐसे सिक्ख परिवार हैं। स. राघवेंदरधारी सिंघ जैसी प्रभावशाली शख्सियत, जिनका लोगों पर दबदबा था और ज्ञानी गुरबचन सिंघ जैसे एक बड़ी प्रेरणा के स्रोत की ग़ैरमौजूदगी में ये सिक्ख अपने आप को सिक्खी की मुख्य धारा से दूर हुए महसूस कर रहे हैं। मेरी बहुत-से लोगों के साथ बातचीत हुई है, जैसे— स. सुखवंत सिंघ, स. रोशन सिंघ, स.

गुरबचन सिंघ, स. अनिल सिंघ, स. सेवक सिंघ, स. अमरजीत सिंघ, स. शमशेर सिंघ, स. दीपक सिंघ, स. संजे सिंघ, स. मंगल सिंघ, स. राजू सिंघ, स. हिंमत सिंघ, स. सुरजीत सिंघ तथा अन्य कई खास लोग थे, जिनके बारे में पहले भी ज़िक्र हो चुका है। वे उस सुहावने वक्त के लिए बैठे हैं, जब उनके गाँवों में भी गुरुद्वारा साहिब स्थापित हों और गुरमति का प्रचार गहराई तक हो।

पटना साहिब में एक गुरमति विद्यालय या टकसाल बननी चाहिए, ताकि वे और उनकी आने वाली पीढ़ियां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की शिक्षाओं को और अच्छी तरह से जान सकें। सिक्ख भाईचारे के इन लोगों के दुखों को समझने और उनके बारे में लिखने का मतलब उनके द्वारा गुजारी जा रही ज़िंदगी और वर्तमान समय के बारे में बताना है। तख़्त साहिब के प्रभाव को और गहराई के साथ देखने की ज़रूरत है। मुझे पटना साहिब में यह महसूस हुआ कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी चारों तरफ़ हैं। वे 'दिल' और 'रूह' हैं। उनके दिखाए मार्ग पर चलें तो हम इन स्थानों पर निवास कर रहे भाइयों की दुख-तकलीफ़ों को दूर कर, हमसे जितना हो सके और उन्हें अपने साथ मिलाएं और सिक्खी में भी उपयुक्त स्थान प्रदान करें, तो यह सच्चे पातशाह को हमारी तरफ से हार्दिक श्रद्धाँजलि होगी।

सिक्खों के आपसी संबंधों में जाति और भाषा से सबन्धित कोई बात कभी नहीं आनी चाहिए। धार्मिक महत्ता को कायम रखते हुए एक-दूसरे का मान-समान होना चाहिए। देसी सभ्याचार को खुलदिली के साथ देखने की ज़रूरत है। हमारे ऐतिहासिक आधार को फिर से ताज़ा करने और मज़बूती के साथ एक सही रास्ता इख्तियार करने की ज़रूरत है। मुझे उनका क्षेत्रीय फख्र देखने को मिला, जो कि स्वाभाविक-सी बात है। ज्ञानी गुरबचन सिंघ की प्रेरणा और स. राघवेंदरधारी सिंघ व उनके साथियों के जोश को मिला कर एक सही आदर्शपूर्वक समाज बनना चाहिए। आज के समय उन महान सिक्खों की सेवा की भाँति उचित प्रचार की अति आवश्यकता है।

ऐसी बहुत-सी संभावनाओं के साथ नये रिश्ते बनाने की तरफ चलें! मुझे पूर्ण आशा है कि हमारे ऐसी विचारधारा वाले भाई और संस्थाओं के साथ मिल कर हमारे बहुत ही ख़ास भाईचारे के भविष्य को संवारने की कोशिश की जाए। इन स्थानों का रौचिक इतिहास और सभ्याचार सिक्खी की अनुपम मिसाल है। हमें पूरी आशा है कि हम अकाल पुरख के आशीर्वाद के साथ पूरे पंथ को एकजुट करेंगे और अपने मकसद में कामयाब होंगे।

ख़बरनामा

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की ३५०वीं शहीदी शताब्दी के अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विशाल गुरमति समारोह आयोजित

श्री अनंदपुर साहिब : २५ नवंबर : नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब, भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी और भाई दिआला जी के ३५०वर्षीय शहीदी शताब्दी से सम्बन्धित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा गुरुद्वारा सीसगंज साहिब, श्री अनंदपुर साहिब में आयोजित मुख्य गुरमति समारोह के दौरान बड़ी संख्या में धार्मिक, पंथक, राजनैतिक और सामाजिक शख़्सियतों ने हाज़िरी भर कर श्री गुरु तेग बहादर साहिब की अजीम शहादत को श्रद्धा और सम्मान भेंट किया। इस विशाल समारोह के दौरान जहाँ विभिन्न नेताओं ने सिक्खों के साथ हो रहे अन्याय का मुकाबला करने के लिए पंथक एकता पर ज़ोर दिया, वहाँ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान द्वारा एक विशेष प्रस्ताव पेश कर पातशाह की शहादत को नमन करते हुए बंदी सिंघों की रिहाई और देश में सिक्खों की धार्मिक आज़ादी व सिक्ख पहचान में बाधा उत्पन्न करने वाली गतिविधियों पर तुरंत रोक लगाकर सिक्खों को अपने न्यारे स्वरूप, ककारों एवं फलसफे का अनुसरण करते हुए जीवन जीने के लिए सुखद माहौल प्रदान करने की केंद्र सरकार से माँग की गई।

श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार तथा तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज ने शताब्दी समारोह के अवसर पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत के इतिहास व सिद्धांत के सम्बंध में बोलते हुए कहा कि जिस प्रकार औरंगजेब अन्य धर्मों की आज़ादी छीन कर अपनी सत्ता को कायम रखना चाहता था, आज भी ऐसे हमले हो रहे हैं, परंतु दुख की बात है कि दूसरों का धर्म बचाने वाले सिक्खों को ही जज़्ब करने की साजिशें तेज़ हो रही हैं। उन्होंने कहा कि आज सिक्खों पर ऐसे हमले इसलिए हो रहे हैं क्योंकि सिक्खों के बीच आपसी विघटन है और इसका लाभ विरोधी शक्तियां उठा रही हैं। उन्होंने कहा कि पंथ की संस्थाएं पंथ की विरासत हैं और इन्हें कमज़ोर करने वाले लोग समझ लें कि पंथ इनके मंसूबे कभी भी कामयाब नहीं होने देगा।

उन्होंने कहा कि धार्मिक शताब्दियां मनाना सभी का सामूहिक कर्त्तव्य है, परन्तु इस अवसर पर गुरु साहिबान के सिद्धांतों की अवज्ञा नहीं होनी चाहिए। उन्होंने नवम पातशाह की शहीदी शताब्दी के सम्बंध में बोलते हुए कहा कि जिन मानवाधिकारों और ज़मीर की आज़ादी के लिए गुरु साहिब ने शहादत दी, आज उनकी शहीदी शताब्दी के अवसर पर सरकारों का फर्ज बनता है कि वे गुरु साहिब द्वारा प्रदत्त सिद्धांतों पर पहरा दें। उन्होंने पंजाब सरकार द्वारा बीते दिन गुरु साहिब की शहीदी शताब्दी को समर्पित आयोजित विधान सभा के विशेष सत्र के बारे में बात करते हुए कहा कि गुरु साहिब को समर्पित इस सत्र में नेताओं द्वारा नंगे सिर शामिल होना गुरु साहिब के अदब-सत्कार के विरुद्ध है। उन्होंने कहा कि सरकारी नुमाइंदों द्वारा श्री अकाल तख़्त साहिब के अधिकार को चुनौती देने की कोशिशों को पंथ कभी सहन नहीं करेगा।

उन्होंने कौम के साथ वादा किया कि वे पंथ के समक्ष हज़ार बार झुकेंगे लेकिन जो सरकारें सिक्खों की पहचान को ख़त्म और गुरुद्वारा साहिबान पर कब्ज़ा करना चाहतीं हैं, उनके साथ सख्त लड़ाई लड़ी जायेगी।

उन्होंने बंदी सिंघों की रिहाई के मुद्दे पर सिक्खों की कौमी माँग को दोहराते हुए संगत से 'जयकारे' लगाकर समर्थन प्राप्त किया। उन्होंने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी द्वारा बंदी सिंघों की रिहाई के लिए प्रस्तुत प्रस्ताव का समर्थन किया। उन्होंने संगत को २८ और २९ नवंबर को गुरुद्वारा बिबाणगढ़ साहिब, श्री कीरतपुर साहिब में आयोजित किए जा रहे शताब्दी समारोहों व विशेष नगर कीर्तन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का न्योता दिया।

उन्होंने शिरोमणि अकाली दल के नेताओं, समूह पंथक शख़्सियतों, संप्रदायों एवं निहंग सिंघ दल पंथ के प्रमुखों, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्यों व संगत का धन्यवाद करते हुए कहा कि गुरु की कृपा द्वारा पंथ हमेशा चढ़दी कला में रहेगा और सभी सिक्ख गुरु-सिद्धांतों पर चलते हुए कौम को दरपेश चुनौतियों का सामना करेंगे।

शताब्दी समारोह के अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अपने संबोधन में गुरु साहिब की शहादत को दुनिया के इतिहास में धर्म की रक्षा के लिए बड़ी उदाहरण करार देते हुए कौम को अपने अंदर धर्म के जीवन-मूल्यों के प्रति ऐसी ही दृढ़ शक्ति पैदा करने की अपील की। उन्होंने सरकारों को भी गुरु साहिब की शहादत के उद्देश्य से प्रेरणा लेने की बात करते हुए कहा कि गुरु साहिब ने मानवता को ज़िंदा रखने की सबसे महँगी कीमत अदा की थी, सरकारों का कर्त्तव्य है कि आज सिक्खों के अधिकारों की रक्षा की जाए। उन्होंने कहा कि सिक्खों और पंजाब के अधिकारों के साथ छेड़छाड़ सरकारों के लिए ठीक नहीं है। एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि भाखड़ा ब्यास मैनेजमेंट बोर्ड, पंजाब यूनिवर्सिटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एक्ट तथा चंडीगढ़ पर पंजाब के अधिकार के साथ छेड़छाड़ करने की सरकारों की सरप्रस्ती में हो रही हरकतें नवम पातशाह की शहादत के विरुद्ध हैं। उन्होंने कहा कि सरकारों का काम संविधान के दायरे में रह कर प्रत्येक के अधिकारों का ख़्याल रखना होता है, जबकि यहाँ विशेष तौर पर सिक्खों व पंजाबियों को बेगानगी का एहसास करवाया जाता है। सिक्ख कौम अरसे से बंदी सिंघों की रिहाई की माँग कर रही है, परन्तु सरकार एलान एवं नोटिफिकेशन जारी करने के बाद रिहा नहीं कर रही है। उन्होंने कहा कि भाई बलवंत सिंघ राजोआणा की सज़ा-तबदीली और बंदी सिंघों की रिहाई के लिए सरकार को बड़ा दिल दिखा कर गुरु साहिब को सच्ची श्रद्धा भेंट करनी चाहिए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने केंद्र सरकार से यह भी माँग की कि देश में सिक्खों की धार्मिक आज़ादी और पहचान में बाधा उत्पन्न करने वाले घटनाक्रम को तुरंत बंद कर सिक्खों को देश भर में अपने न्यारे स्वरूप और ककारों को धारण करते हुए जीवन जीने का सुखद माहौल प्रदान किया जाये। एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने अपने संबोधन के दौरान अगला पूरा वर्ष श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत को समर्पित एक ज़ोरदार धर्म प्रचार लहर प्रचंड करने का एलान भी किया। उन्होंने कहा कि गुरु साहिब की शिक्षाओं और शहादत के गौरवमयी इतिहास का प्रचार करने के लिए

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी वचनबद्धता प्रकट करती है। इसी के अंतर्गत घर-घर तक गुरु साहिब के उपदेशों व फलसफे को पहुँचाने के बड़े यत्न किये जाएंगे। उन्होंने नवम पातशाह के ३५०वें शहीदी दिवस को यादगार बनाए रखने के लिए गुरु पातशाह जी के नाम पर सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर साहिब में १००० कमरों वाली सराय बनाने का एलान किया। उन्होंने कहा कि इसमें भाई मतीदास जी, भाई मतीदास जी और भाई दिआला जी के नाम पर ब्लाक बनाए जाएंगे। उन्होंने २०२७ ई. में श्री अमृतसर साहिब का ४५०वां स्थापना दिवस कौमी हर्षोल्लास के साथ मनाने का एलान भी किया।

इस अवसर पर बोलते हुए शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल ने कहा कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब की दूसरे धर्म को बचाने के लिए दी गई शहादत दुनिया भर में अतुलनीय है। उन्होंने कहा कि गुरु साहिबान की शिक्षाओं की वजह से ही आज दुनिया भर में सिक्ख जहाँ अपनी मेहनत, ईमानदारी और दृढ़ता के कारण बुलन्दियों को छू रहे हैं, वहाँ कठिन समय में दूसरों की सहायता व सेवा कर विश्व भर में अलग पहचान भी बना चुके हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में कहीं भी प्राकृतिक आपदा आ जाये तो सिक्ख मानवता की सेवा के लिए सबसे आगे होते हैं। उन्होंने नवम पातशाह की शहादत को नमन किया और इस बात पर दुख भी जताया कि दूसरे धर्म को बचाने वाले धर्म को ख़त्म करने के लिए आज बड़े स्तर पर साजिशें हो रही हैं। सिक्खों की ताकत को ख़त्म करने के लिए सिक्खों की सिरमौर संस्थायों और जत्थेबंदियों पर कब्ज़ा करने की सरकारी साजिशें हो रही हैं। उन्होंने पिछले समय के दौरान तख़्त श्री हजूर साहिब प्रशासनिक बोर्ड पर महाराष्ट्र सरकार के कब्ज़े, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब की प्रबंधक कमेटी को सिक्खों से छीनने की कोशिशों का ज़िक्र करते हुए कहा कि सिक्खों को अभी भी जागने की ज़रूरत है, क्योंकि सिक्ख विरोधी ताकतों का अगला निशाना शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी है। उन्होंने कहा कि दुनिया में कहीं भी सिक्खों को कोई समस्या आए तो हमेशा सिक्खों की नुमाइंदा संस्थाएं और जत्थेबंदियाँ ही उनके पीछे खड़ी होती हैं, परन्तु अगर सिक्ख-शक्ति की ये संस्थाएं ही ख़त्म हो गईं तो सिक्खों का हाथ थामने वाला कोई नहीं रहेगा। उन्होंने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के ३५०वर्षीय शहीदी दिवस के संदर्भ में कहा कि गुरु साहिब की शिक्षाओं को जीवन में कमाना आज की बड़ी ज़रूरत है, क्योंकि गुरु साहिब ने हक-सच के लिए आवाज़ बुलंद की थी और आज भी हक-सच को ज़िंदा रखने के लिए आस्था व दृढ़ता की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि पंथक संस्थाएं सिक्खी के लिए हमेशा बड़े यत्न करती रही हैं। इसी के अंतर्गत शिरोमणि अकाली दल ने अपनी सरकार के समय जहाँ सिक्ख-शताब्दियों को कौमी हर्षोल्लास के साथ मनाया, वहाँ नौजवानी को विरासत के साथ जोड़ने के लिए यादगारें स्थापित करने जैसे कई बड़े ऐतिहासिक कार्य भी किये। आज की सरकारें केवल लोगों को गुमराह कर अपने मंसूबे सिद्ध करने के जुगाड़ में हैं, जबकि पंजाब के लोग सब जानते हैं।

शताब्दी के समारोह के दौरान शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ ९६वें करोड़ी, तरना दल हरियांवेलां के प्रमुख बाबा निहाल सिंघ, दल बाबा बिधीचंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, शिरोमणि अकाली दल के महासचिव स. बलविंदर सिंघ भूंदड़, बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब,

बाबा लक्खा सिंघ नानकसर, बाबा कशमीर सिंघ भूरी वाले, भाई महिंदर सिंघ निष्काम सेवक जत्था यूके, बाबा अमीर सिंघ जवद्दी टकसाल तथा बाबा सुरजन सिंघ ने भी संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में पंथ को इकट्ठे होकर इतिहास, सिद्धांत एवं परंपराओं की पहरेदारी के लिए यत्नशील रहने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि कौमी गौरव पंथक शक्ति के इकट्ठा रहने में ही है। वक्ताओं ने नवम पातशाह की महान शहादत को समूची मानवता के लिए मार्गदर्शन करार दिया।

इससे पूर्व प्रात:काल गुरुद्वारा सीसगंज साहिब में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए और पंथ-प्रसिद्ध रागी जत्थों ने संगत को गुरबाणी-कीर्तन श्रवण करवाया। समारोह के दौरान सिंघ साहिब ज्ञानी परविंदरपाल सिंघ तथा बाबा बंता सिंघ ने कथा-विचार की और ज्ञानी निरमल सिंघ नूर के ढाडी जत्थे व स. केवल सिंघ महिता के कवीशरी जत्थे ने सिक्ख इतिहास श्रवण करवाया।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की ३५०वर्षीय शहीदी शताब्दी के समारोह

श्रद्धा और वैरागमयी माहौल में हुए सम्पन्न

श्री अनंदपुर साहिब : २९ नवंबर : नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब तथा उनके साथ शहादत प्राप्त करने वाले भाई मतीदास जी, भाई सतीदास जी एवं भाई दिआला जी की ३५०वर्षीय शहीदी शताब्दी से सम्बन्धित समारोहों की सम्पन्नता आज गुरुद्वारा सीसगंज साहिब श्री अनंदपुर साहिब में रूहानियत भरे माहौल में हुई। आज के समारोह 'सीस ससकार दिवस' के तौर पर गुरु साहिब की लासानी कुर्बानी की शाश्वत याद के रूप में मनाए गए। इससे पूर्व 'सीस मार्ग नगर कीर्तन' गुरुद्वारा बिबाणगढ़ साहिब श्री कीरतपुर साहिब से प्रस्थान कर गुरुद्वारा सीसगंज साहिब श्री अनंदपुर साहिब में पहुँच कर सम्पन्न हुआ। यह नगर कीर्तन दिल्ली से गत दिवस पूर्व आरंभ हुआ था, जो पड़ाव-दर-पड़ाव बीती रात गुरुद्वारा बिबाणगढ़ साहिब श्री कीरतपुर साहिब पहुँचा था।

आज श्री कीरतपुर साहिब से श्री अनंदपुर साहिब तक सजाए 'सीस मार्ग नगर कीर्तन' में हज़ारों की संख्या में संगत ने श्रद्धा-भाव के साथ भाग लिया। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार और तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज, तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी टेक सिंघ धनौला, तख़्त श्री हरिमंदर जी पटना साहिब के जत्थेदार ज्ञानी बलदेव सिंघ, शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल, शिरोमणि पंथ अकाली बुड्ढा दल के प्रमुख बाबा बलबीर सिंघ, तरना दल हरियां वेलां के प्रमुख बाबा निहाल सिंघ, दल बाबा बिधीचंद के प्रमुख बाबा अवतार सिंघ सुरसिंघ, तरना दल बाबा बकाला साहिब के प्रमुख बाबा जोगा सिंघ, बाबा कशमीर सिंघ भूरी वाले, दशमेश तरना दल के प्रमुख बाबा मेजर सिंघ (सोढी) सहित अन्य पंथक हस्तियों ने हाज़िरी भरी।

निहंग सिंघ जत्थेबंदियों द्वारा घोड़ों व हाथियों सहित शमूलियत की गई और स्कूलों-कॉलेजों के विद्यार्थियों ने भी हाथों में खालसयी निशान पकड़ कर नगर कीर्तन में हाज़िरी लगवाई। भाई जैता जी द्वारा गुरु साहिब का पवित्र सीस दिल्ली से श्री अनंदपुर साहिब लाने की याद में यह नगर कीर्तन संगत को भावुक कर

रहा था। संगत श्रद्धा, समर्पण और वैराग्य की भावना के साथ 'सतिनामु वाहिगुरु' का जाप करते हुए चल रही थी।

इसी दौरान गुरुद्वारा सीसगंज साहिब में सजे दीवान में शिरोमणि रागी भाई हरजिंदर सिंघ श्रीनगर वाले, सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हज़ूरी रागी भाई करनैल सिंघ, भाई शौकीन सिंघ तथा भाई कारज सिंघ के जत्थे ने संगत को गुरबाणी-कीर्तन श्रवण करवाया, जबकि पंथ-प्रसिद्ध कथावाचक भाई साहिब भाई पिंदरपाल सिंघ ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब के जीवन और शहादत का अद्वितीय वृत्तांत संगत के साथ साझा किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने संगत को संबोधित करते हुए कहा कि आज का समारोह केवल एक यादगार दिवस ही नहीं, बल्कि धर्म, इंसानियत तथा न्याय की रक्षा के लिए श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा दी गई सर्वोत्तम कुर्बानी को हृदय में बसाने और गुरु साहिब के उपदेशानुसार जीवन जीने की एक प्रेरणा के रूप में है। एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने शताब्दी समारोहों तथा नगर कीर्तनों में सहयोग करने के लिए सिंघ साहिबान, तख़्त साहिबान के जत्थेदार साहिबान, तख़्त साहिबान की प्रबंधक कमेटियों, समूह निहंग सिंघ दलों, टकसालों, सिक्ख जत्थेबंदियों, निरमला संप्रदायों, उदासीन संप्रदायों, कार-सेवा वाले महापुरुषों, लंगर के लिए सहयोग करनी वाली संस्थायों, विभिन्न राज्य की गुरुद्वारा कमेटियों सहित विभिन्न धर्मों के लोगों का विशेष तौर पर धन्यवाद किया। उन्होंने भविष्य में भी सिक्ख संस्था के साथ सहयोग करने की आशा प्रकट की।

श्री अकाल तख़्त साहिब के कार्यकारी जत्थेदार ज्ञानी कुलदीप सिंघ गड़गज्ज ने संबोधित करते हुए नवम पातशाह के 'सीस ससकार दिवस' के अवसर पर गुरुद्वारा बिबाणगढ़ साहिब श्री कीरतपुर साहिब से गुरुद्वारा सीसगंज साहिब श्री अनंदपुर साहिब तक प्रत्येक वर्ष नगर कीर्तन सजाने का एलान किया। उन्होंने कहा कि सिक्ख जत्थेबंदियों द्वारा आए सुझाव के अनुसार यह नगर कीर्तन प्रत्येक वर्ष गुरुद्वारा बिबाणगढ़ साहिब श्री कीरतपुर साहिब से प्रात:काल ९ बजे आरंभ हुआ करेगा, जो अपरान्ह १ बजे गुरुद्वारा सीसगंज साहिब श्री अनंदपुर साहिब पहुँच कर जपु जी साहिब और कीर्तन सोहिला साहिब के पाठ के उपरांत अरदास के साथ सम्पन्न होगा।

जत्थेदार गड़गज्ज ने कहा कि आज का इकट्ठ यह दरसा रहा है कि सिक्ख का मुख आज भी गुरु की तरफ है। उन्होंने कहा कि यदि कोई हमारी पहचान को जज़्ब करने की सोच रखता है, वो यह अवश्य याद रखे कि हम श्री गुरु तेग बहादर साहिब के वारिस हैं। उन्होंने संगत को गुरु साहिब के उपदेशानुसार जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की।

नगर कीर्तन में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी परविंदरपाल सिंघ, तख़्त श्री पटना साहिब के हेड ग्रंथी ज्ञानी गुरदयाल सिंघ, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी जोगिंदर सिंघ, ज्ञानी हरपाल सिंघ मुख्य ग्रंथी गुरुद्वारा श्री फतिहगढ़ साहिब, भाई महिंदर सिंघ निष्काम सेवक जत्था यूके, बाबा नरिंदर सिंघ हजूर साहिब वाले, दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ खालसा की तरफ से बाबा गुरमीत सिंघ, बाबा लक्खा सिंघ नानकसर, बाबा सुक्खा सिंघ सरहाली, शिरोमणि अकाली दल के वरिष्ठ नेता डॉ. दलजीत सिंघ (चीमा), स. महेशइंदर सिंघ (ग्रेवाल) सहित भारी संख्या में संगत उपस्थित थी।

डायरेक्टोरेट ऑफ़ एजुकेशन
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब

शिरोमणि कमेटी द्वारा संचालित स्कूल

१. साहिबजादा बाबा फतहि सिंघ पब्लिक स्कूल, गुरु का बाग, श्री अमृतसर साहिब
२. गुरु गोबिंद सिंघ पब्लिक स्कूल, मलूका, बठिंडा
३. माता गुजरी पब्लिक स्कूल, थेहड़ी साहिब, श्री मुकतसर साहिब
४. संत बाबा फतहि सिंघ पब्लिक स्कूल, बल्ले-बदियाला, बठिंडा
५. गुरु गोबिंद सिंघ पब्लिक स्कूल, गंगसर जैतो, फरीदकोट
६. साहिबज़ादा अजीत सिंघ पब्लिक स्कूल, बजीदपुर, फिरोज़पुर
७. साहिबज़ादा ज़ोरावर सिंघ पब्लिक स्कूल, नडाला, कपूरथला
८. भाई बहिलो जी पब्लिक स्कूल, फफड़े भाई के, मानसा
९. साहिबज़ादा जुझार सिंघ पब्लिक स्कूल, कोट धरमू, मानसा
१०. माता सुंदरी पब्लिक स्कूल, कोट शमीर, बठिंडा
११. संत हरचंद सिंघ लौंगोवाल पब्लिक स्कूल, शेरपुर, संगरूर
१२. बाबा अजै सिंघ खालसा पब्लिक स्कूल, गुरदास नंगल, गुरदासपुर
१३. भाई महां सिंघ खालसा पब्लिक स्कूल, जलालाबाद, फाज़िल्का
१४. गुरु हरिगोबिंद साहिब खालसा पब्लिक स्कूल, श्री हरिगोबिंदपुर, गुरदासपुर
१५. भाई नंद लाल पब्लिक स्कूल, श्री अनंदपुर साहिब, रूपनगर
१६. महाराजा रणजीत सिंघ पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, तरनतारन
१७. गुरु तेग बहादर पब्लिक स्कूल, छाजली, संगरूर
१८. श्री गुरु रामदास खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, रामसर रोड, श्री अमृतसर साहिब
१९. गुरु नानक गर्ल्स सीनियर सेकंडरी स्कूल, घी मंडी, श्री अमृतसर साहिब
२०. माता गंगा कन्या सीनियर सेकंडरी स्कूल, बाबा बकाला साहिब, श्री अमृतसर साहिब
२१. श्री गुरु तेग बहादर सीनियर सेकंडरी स्कूल, बाबा बकाला साहिब, श्री अमृतसर साहिब
२२. खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, गुरु का बाग, अजनाला, श्री अमृतसर साहिब
२३. कल्लर खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, हरियाना, हुशियारपुर
२४. श्री गुरु गोबिंद सिंघ सीनियर सेकंडरी स्कूल, खन्ना, लुधियाना
२५. गुरु नानक खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, तखतूपुरा, मोगा
२६. भुपिंदरा खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, मोगा
२७. खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब, ठट्ठा, तरनतारन
२८. श्री गुरु रामदास पब्लिक स्कूल, गोल्डन टैंपल कालोनी, श्री अमृतसर साहिब
२९. श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, रमदास, श्री अमृतसर साहिब
३०. श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब खालसा सीनियर सेकंडरी स्कूल, छेहरटा साहिब, श्री अमृतसर साहिब
३१. गुरु अरजन देव पब्लिक स्कूल, बारठ साहिब, गुरदासपुर
३२. गुरु नानक देव अकादमी, जलंधर रोड, बटाला, गुरदासपुर
३३. गुरु नानक देव अकादमी, ओठियां, गुरदासपुर
३४. साहिबज़ादा अजीत सिंघ पब्लिक स्कूल, लद्धेवाल, माहिलपुर, हुशियारपुर
३५. दशमेश पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, माणूंके, तहसील जगराउं, लुधियाना
३६. दशमेश पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, टाहलीयाणा साहिब, रायकोट, लुधियाना
३७. परिवार विछोड़ा पब्लिक स्कूल, सरसा नंगल, रूपनगर
३८. बाबा गुरदित्ता जी पब्लिक स्कूल, जिन्दवड़ी, श्री अनंदपुर साहिब
३९. खालसा पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, जंड साहिब, रूपनगर
४०. महाराजा रणजीत सिंघ पब्लिक स्कूल, दिआलपुरा, तरनतारन
४१. महाराजा रणजीत सिंघ पब्लिक स्कूल, रत्तोके, तहसील पट्टी, तरनतारन
४२. बीबी रजनी सीनियर सेकंडरी स्कूल, पट्टी, तरनतारन
४३. बाबा बुड्ढा जी पब्लिक सीनियर सेकंडरी स्कूल, बीड़ साहिब, ठट्ठा, तरनतारन
४४. दशमेश पब्लिक स्कूल, गुरुद्वारा गुरपलाह साहिब, ऊना, हिमाचल प्रदेश
४५. श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब सीनियर सेकंडरी पब्लिक स्कूल, मंजी साहिब कोटां, लुधियाना
४६. बाबा अजापाल सिंघ खालसा पब्लिक स्कूल, नाभा, पटियाला
४७. माता दमोदरी खालसा कन्या सीनियर सेकंडरी स्कूल, डरोली भाई, मोगा
४८. गुरु अरजन देव पब्लिक स्कूल, करतारपुर, जलंधर

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2026-28 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB//R-001/2026-28

GURMAT GYAN January 2026

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

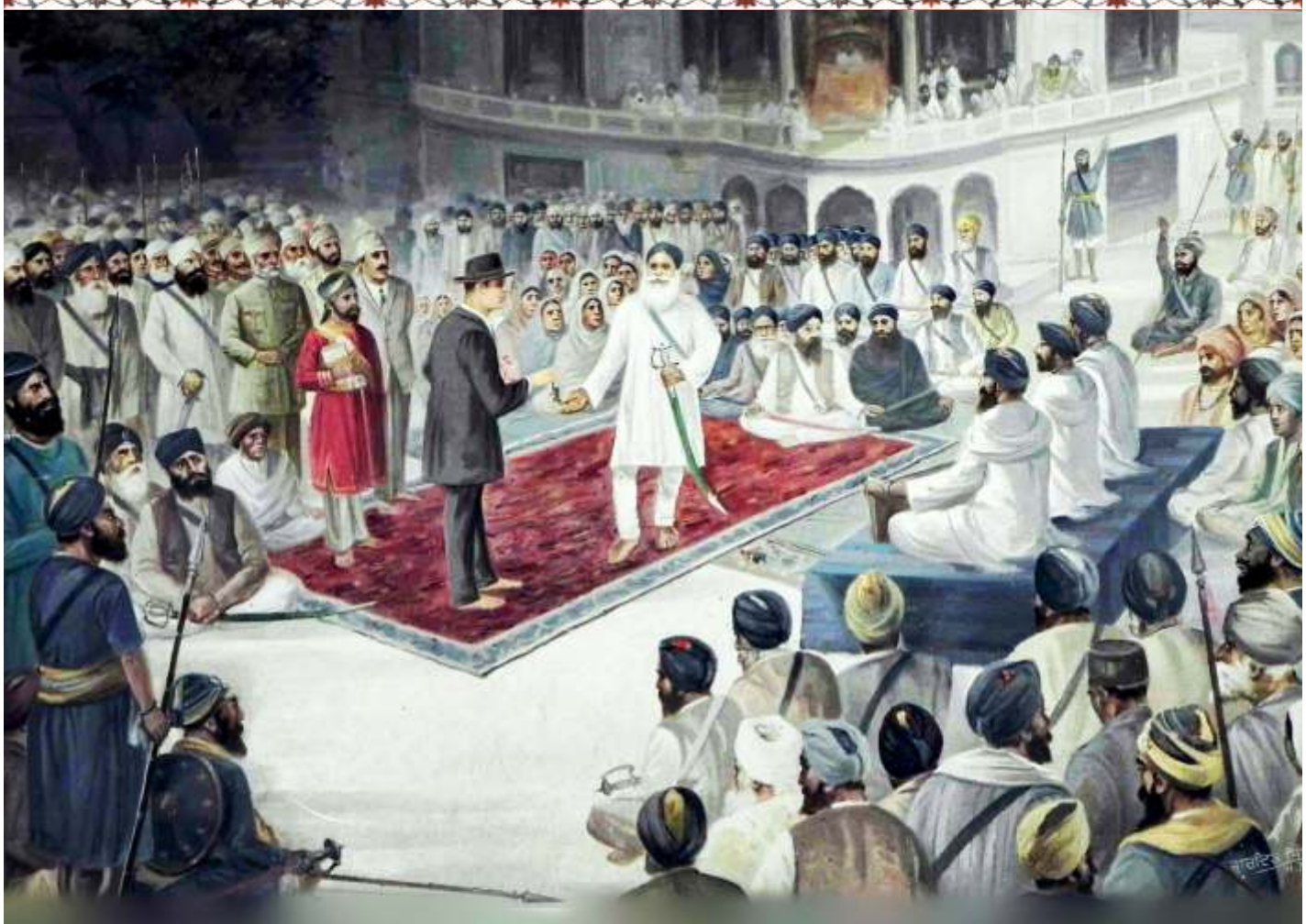

चाबियों का मोर्चा फ़तह होने के पश्चात्
बाबा खड़क सिंघ जी अंग्रेज़ अधिकारी से चाबियां लेते हुए।

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundari Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 7-01-2026